

मल्हार

हिंदी पाठ्यपुस्तक

HINDI TEXT BOOK

671

6

भाग 1

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

KARNATAKA TEXTBOOK SOCIETY (R.)
6th Cross, Malleshwaram, Bangalore 560 003

0671 – मल्हार
कक्षा 6 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-946-7

प्रथम संस्करण
जून 2024 ज्येष्ठ 1946

PD 1000T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2024

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग , नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा शगुन ऑफ़सेट प्रैस, प्लॉट न. 82, इकोटैक -12, ग्रेटर नोएडा 201 009 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

कर्नाटक पाठ्यपुस्तक सोसायटी (आर.)
6वां क्रॉस, मल्लेश्वरम,
बेंगलुरु - 560 003. फोन : 080-26422238

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट : धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अमिताभ कुमार*
उत्पादन अधिकारी : *जहान लाल*

आवरण एवं ले-आउट
बैनियन ट्री

चित्रांकन
जोएल गिल

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 2 18/06/2024 11:10:29

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। नई शिक्षा नीति में निहित चुनौतियों और सुझावों को आधार बनाते हुए विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में सभी स्तरों की पाठ्यचर्या क्षेत्रों को तैयार किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2023 का उद्देश्य है कि बुनियादी और आरंभिक स्तर पर बच्चों के पंचकोशीय विकास को सुनिश्चित करते हुए मध्य स्तर पर उनके विकासात्मक स्वरूप को अग्रसर किया जाए। इस प्रकार, मध्य स्तर कक्षा 6 से कक्षा 8 तक तीन वर्षों को समाहित करते हुए आरंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना जो बच्चों की विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करे और उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करे। मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषयों को शामिल किया गया है जो बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण और व्यावसायिक शिक्षा शामिल हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्यसामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के बीच इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। ऐसी निर्णायक भूमिका जो बच्चों की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाएगी। कक्षा नियोजन और विषयों की पढ़ाई के बीच उचित संतुलन बनाने के लिए शिक्षकों की तैयारी भी आवश्यक है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निरंतर गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए एक प्रतिबद्ध संस्था है। पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु संबंधित विषय विशेषज्ञों, शिक्षाशास्त्रियों और अध्यापकों को समितियों में शामिल किया जाता है। कक्षा 6 के लिए निर्मित

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 3 14/06/2024 10:14:06

'मल्हार' पुस्तक में साहित्य की प्रमुख विधाएँ सम्मिलित हैं। ये रचनाएँ देशप्रेम, पर्यावरण, विज्ञान, कला, इतिहास, खेल और भारतीय समाज के अनुभवों का भाषिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* का अनुपालन करते हुए यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मानवीय मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है, जो राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस उद्देश्य के साथ ही समावेशन, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उचित समन्वयन और स्कूल-आधारित समग्र मूल्यांकन आदि समस्त विषयों से संयोजित होने वाले क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इसमें दी गई गतिविधियों और प्रश्न अभ्यासों को बच्चे स्वयं तथा सहपाठियों के साथ समूह में सीखेंगे। सहपाठियों के समूह में सीखना न केवल रोचक होता है अपितु यह बहुत महत्वपूर्ण भी है क्योंकि इससे बच्चों का बहुआयामी विकास होता है, साथ ही सीखने की प्रक्रिया रोचक ही नहीं अपितु आनंदमय और सहज हो जाती है। इस बहुआयामी पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री और गतिविधियाँ विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को सृजनात्मक अनुभव से संपृक्त करने में सक्षम हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के अलावा इस स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न अन्य शिक्षण संसाधनों का पता लगाने हेतु भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे संसाधन उपलब्ध कराने में विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को ऐसा करने के लिए मार्गदर्शन और प्रोत्साहित करने में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित है। हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
31 मई 2024

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 4 14/06/2024 10:14:37

यह पुस्तक

सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में भाषा का केंद्रीय स्थान है। भाषा की शिक्षा ही विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करती है। किसी भी नागरिक से क्या-क्या अपेक्षाएँ होती हैं, इन्हें ध्यान में रखते हुए औपचारिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के सभी चरणों में भाषा शिक्षण के मुख्य लक्ष्य इस तरह से रेखांकित किए जा सकते हैं— सृजनशीलता; ज्ञान परंपरा और प्रयोग; स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतन; राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना; और स्वास्थ्य एवं खुशहाली। भाषा की सृजनशीलता से आशय है कि विद्यार्थियों में भाषा के संवादधर्मी स्वरूप के रचनात्मक पक्ष के प्रति समझ बने और वे विभिन्न वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक निर्मितियों के अनुरूप भाषा का सृजनशील प्रयोग कर सकें। विद्यार्थी अपनी बात को अपने ढंग से कह सकें और अपनी स्वाभाविक सृजनशीलता एवं कल्पना को पोषित कर सकें। ज्ञान-परंपरा और प्रयोग भाषा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसमें परंपरागत ज्ञान और उसका अभिनव प्रयोग शामिल है जिससे विद्यार्थियों में अपने रीति-रिवाज़ों और परंपराओं के प्रति विवेकपूर्ण सुरुचि पैदा हो सके। भाषा पढ़ने-पढ़ाने का लक्ष्य यह भी है कि विद्यार्थी स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतक बनें। साथ ही साथ वर्तमान और अतीत की घटनाओं का तार्किक विश्लेषण कर सकें। विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना के विकास को ध्यान में रखते हुए परिवेशीय सजगता व आत्मीय सम्बद्धता का भाव पैदा हो, जो भारतीय सभ्यता और अस्मिता निर्माण की बहुविध रंगतों की सतत निर्मिति है। भाषा को समझने की क्षमता विकसित करना व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करना भी है। स्वास्थ्य एवं खुशहाली से आशय है कि विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रूप से स्फूर्त हों, उनमें स्वस्थ दृष्टिकोण एवं आदतों का विकास हो और भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से परिपक्वता आए। भाषा का सीखना-सिखाना सभी विषय क्षेत्रों के प्रति समझ बनाने के साथ-साथ शिक्षार्थी के भावात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी महत्वपूर्ण हो तथा वे भाषिक, प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण, खेल, कला, विज्ञान, पर्यटन और नीति के प्रति सचेत हों।

कक्षा 6 की हिंदी पाठ्यपुस्तक **'मल्हार'** आपको सीखने-सिखाने की एक अनोखी और आनंददायक यात्रा पर ले जाने के लिए तैयार की गई है। यह पुस्तक आज के विद्यार्थियों, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं, रुचियों और अपेक्षाओं को पूरा करने के उद्देश्य से विकसित की गई है। हमारे विद्यार्थी अपने आस-पास के समाज, अपने महान राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास और

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 5 27/08/2024 10:23:33

संस्कृति को समझ सकें, भारत की लोकतांत्रिक, प्रेम, भाईचारे, पर्यावरण संरक्षण, जेंडर समानता, वसुधैव कुटुंबकम, शांति और सहिष्णुता की हज़ारों वर्षों पुरानी परंपराओं और विरासत को आगे बढ़ा सकें और अपने दैनिक जीवन में हिंदी का आत्मविश्वासपूर्वक उपयोग कर सकें, इसके लिए पुस्तक में पर्याप्त सामग्री दी गई है। सामग्री चयन में भारत के विभिन्न राज्यों, कलाओं, परिवेश का भी समावेशन किया गया है।

इस पुस्तक में हिंदी साहित्य की अनेक प्रसिद्ध रचनाओं को सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी हिंदी साहित्य के गौरवशाली और समृद्ध इतिहास से परिचित हो सकें और एक जागरूक पाठक बनने की दिशा में अग्रसर हो सकें। इस पुस्तक की रचना करते समय इस बात को ध्यान में रखा गया है कि यह आज के भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप सक्षम, आत्मविश्वास से पूर्ण और चिंतनशील नागरिक के निर्माण में सहायक हो सके।

इस पुस्तक का पूर्ण-क्षमताओं के साथ उपयोग करने के लिए अध्यापकों को इसके निम्नलिखित पक्षों के बारे में जान लेना होगा—

बहुभाषिकता हमारे देश की अनूठी विशेषता और ताकत है। इस पुस्तक में बहुभाषिकता के कई स्वरूप मिलेंगे। विभिन्न भाषाओं का समन्वय, भारतीय भाषाओं की एकात्मकता, विभिन्न साहित्यिक अभिव्यक्तियों या विषयों का समन्वय, हिंदी भाषा के भिन्न-भिन्न रूपों का समन्वय, अनुवाद में भाषाएँ आदि। अपेक्षा है कि पढ़ने-पढ़ाने के संदर्भ में बहुभाषिक स्रोतों या संदर्भों को एक ताकत और अवसर की तरह प्रयोग कर सकें।

पुस्तक के चित्र रचनाओं को समृद्ध करने के दृष्टिकोण से दिए गए हैं। ये पाठ के संदर्भों को नए विस्तार और आयाम देते हैं तथा समझने-समझाने में आसान बनाते हैं। इन चित्रों पर बातचीत, लेखन और अन्य गतिविधियों के लिए सुझाव पुस्तक में जगह-जगह पर दिए गए हैं। अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए स्वयं भी अनेक गतिविधियों की रचना की जा सकती है।

पुस्तक में संदर्भ में व्याकरण की स्तरानुकूल अवधारणाएँ सम्मिलित की गई हैं। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि इस कक्षा-स्तर पर व्याकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को परिभाषाओं को याद करवाना न होकर उन्हें दैनिक जीवन में भाषा का प्रभावशाली उपयोग कर सकने में सक्षम बनाना है। विद्यार्थियों का भाषाई प्रयोगों पर ध्यान जाए, उनका शब्द-भंडार विकसित हो, वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए अनुकूल और संगत भाषा का प्रयोग कर सकें, इसके लिए अनेक रोचक गतिविधियाँ पुस्तक में सम्मिलित की गई हैं।

पाठों को संवादात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है कि विद्यार्थी इस पुस्तक को एक मित्र और अनुभवी मार्गदर्शक के रूप में देख सकें। इसलिए अनेक स्थानों पर पुस्तक पाठकों से

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 6 10/06/2024 14:10:11

वार्तालाप करती हुई प्रतीत होती है। यह संवादात्मक शैली पुस्तक को सहज, सरल और उपयोगी बनाने में सहायक है। यही सहजता पुस्तक के अभ्यासों में भी दिखाई देती है।

मौलिक और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर देते हुए पुस्तक के अनेक प्रश्नों में विद्यार्थियों को उनके अपने विचारों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त करने के अवसर दिए गए हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में उनके विचारों को सम्मानपूर्वक सुना जाए। भले ही किसी विद्यार्थी के विचार सबसे अलग हों, फिर भी तर्कों और उदाहरणों द्वारा उसे उचित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता करना आवश्यक है।

पठन के तरीके को विस्तार देते हुए पुस्तक में दिए गए पाठ कई प्रकार के हैं। यह पुस्तक फिल्म, चित्रात्मक सूचना, पोस्टर सभी को पढ़ने की ओर ध्यान दिलाती है। सभी के पढ़ने के अलग-अलग तरीके होते हैं। पठन विस्तार की दृष्टि से पुस्तकालय, वेबलिंक इत्यादि की ओर भी ध्यान दिलाया गया है।

पुस्तक में अनेक रोचक समावेशी गतिविधियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों को उनमें से कुछ गतिविधियों को अकेले करना होगा, कुछ को अपने समूह में और कुछ को पूरी कक्षा को मिलकर करना होगा। पुस्तक की अनेक गतिविधियों को करने के लिए विद्यार्थियों को अपने समूह के साथ चर्चा करनी होगी। इसके लिए आवश्यक है कि समय-समय पर कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँ। एक समूह में 4 से 8 विद्यार्थी सम्मिलित हो सकते हैं। यदि कक्षा में विशेष रूप से सक्षम या दिव्यांग (शारीरिक या मानसिक) विद्यार्थी हैं तो वे भी इन्हीं समूहों में होने चाहिए। अभ्यास को इस प्रकार निर्मित किया गया है कि सभी तरह के विद्यार्थी (दिव्यांग सहित) उसे करने में सक्षम होंगे।

पुस्तक के प्रत्येक प्रश्न के साथ एक चित्रात्मक संकेत (आइकॉन) दिया गया है। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि उस प्रश्न में उन्हें क्या करना है— चर्चा करनी है, लिखना है, बोलकर उत्तर देना है या कोई गतिविधि करनी है। इसलिए सत्र के प्रारंभ में ही विद्यार्थियों को इन चित्र-संकेतों के अर्थ और उपयोग समझा दें।

हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना एक महत्वपूर्ण कौशल है। इस कौशल के विकास के लिए पुस्तक के अंत में शब्दकोश दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी कक्षा 6 से ही हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना प्रारंभ कर दें। इस शब्दकोश में पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए ऐसे शब्दों को स्थान दिया गया है जो कक्षा 6 के अधिकांश बच्चों के लिए नए या अपरिचित हो सकते हैं। शब्दकोश के साथ हिंदी वर्णमाला और देवनागरी लिपि के भारतीय ब्रेल रूप 'भारती' को भी दिया गया है ताकि विद्यार्थी देवनागरी के ब्रेल रूप के प्रति जागरूक हो सकें।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 7 10/06/2024 14:10:12

पाठ की संरचना

पाठ— सबसे पहले पाठ का शीर्षक, पाठ संख्या और मूल पाठ दिया गया है। निबंध पाठों में पाठ का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

रचनाकार से परिचय— रचना के अंत में रचनाकार का स्तरानुरूप 4–5 पंक्तियों में सरल, सृजनात्मक परिचय दिया गया है। यह परिचय सूचनात्मक न होकर सृजनात्मक लेखन के उदाहरण हैं ताकि विद्यार्थियों को परिचय लेखन के विविध रूपों और सृजनात्मक लेखन का आनंद लेने के अवसर मिल सकें। यह परिचय लेखक की जीवनी न होकर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व के किन्हीं विशेष पक्षों का रोचक वर्णन है। इस बात पर विशेष ध्यान दें कि यह परिचय विद्यार्थियों की औपचारिक (लिखित) आकलन प्रक्रिया का अंग नहीं है।

गतिविधियाँ और अभ्यास— पाठ और रचनाकार के परिचय के बाद गतिविधियाँ और अभ्यास दिए गए हैं। इन्हें सीखने की प्रक्रिया के अंग के रूप में दिया गया है। ये गतिविधियाँ 'सीखने का आकलन' न होकर 'सीखने के लिए आकलन' सिद्धांत पर आधारित हैं। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों को पाठ को समझने में, उसे अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने में और अपनी भाषाई कुशलताओं को प्रखर करने में सहायता मिलेगी। इन अभ्यासों में अनेक स्थानों पर विद्यार्थियों के लिए संकेत भी दिए गए हैं जिनसे उन्हें चर्चा करने और अपने मौलिक उत्तरों तक पहुँचने में सहायता मिलेगी। यहाँ अनेक प्रश्न ऐसे हैं जिनके अनेक उत्तर हो सकते हैं क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी के अनुभव और कल्पना अन्य विद्यार्थियों से भिन्न हो सकती है। अपेक्षा है कि आप मौलिक उत्तरों का कक्षा में स्वागत करें और उनकी सराहना हो।

मेरी समझ से— इस गतिविधि में विद्यार्थियों को 2–3 बहुविकल्पी प्रश्नों को हल करने के अवसर दिए गए हैं। ये प्रश्न इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि इनके उत्तर चुनने के लिए विद्यार्थियों को पूरे पाठ को समझने के अपने कौशलों के प्रयोग करने के अवसर मिल सकें। हो सकता है कि किसी प्रश्न के लिए विद्यार्थी अपनी समझ से अलग-अलग विकल्प चुन लें। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को अपने उत्तर को चुनने के कारण स्पष्ट करने के लिए कहा गया है ताकि उनके मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल, तर्क करने, उदाहरण देने, सुनने और उसका विश्लेषण करने जैसे महत्वपूर्ण भाषाई कौशलों का विकास हो सके। इस चर्चा के आधार पर विद्यार्थी एक सर्वसम्मत विकल्प के चयन तक पहुँचने में सक्षम हो सकेंगे।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 8 10/06/2024 14:10:12

मिलकर करें मिलान— प्रत्येक पाठ में कुछ ऐसे संदर्भ सम्मिलित रहते हैं जो उस पाठ को और समृद्ध बना देते हैं। उदाहरण के लिए 'मातृभूमि' कविता में राम, गौतम, हिमालय आदि अनेक संदर्भ आए हैं। यदि विद्यार्थी पाठ में आए ऐसे संदर्भों पर ध्यान दे सकें तो वे पाठ को और अच्छी तरह समझ सकेंगे। इसलिए इस प्रश्न में पाठ में से चुनकर कुछ ऐसे शब्दों या शब्द-समूहों को दिया गया है जिनका अर्थ या संदर्भ जानना-समझना पाठ को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इनकी व्याख्या भी दे दी गई है। विद्यार्थियों को इन शब्दों को उनके संदर्भों से मिलान करना है। यह कार्य वे स्वयं, शिक्षकों, अभिभावकों, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से कर सकेंगे।

पंक्तियों पर चर्चा— इस गतिविधि में पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़ें और इन पर विचार करें। उन्हें इनका क्या अर्थ समझ में आया, उन्हें अपने विचार अपने समूह में साझा करने हैं और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखना है। इस प्रकार इस गतिविधि में उन्हें सुनने, बोलने और लिखने-पढ़ने के भरपूर अवसर मिलेंगे।

सोच-विचार के लिए— इस प्रश्न में विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे पाठ पर आधारित बोध-प्रश्नों पर स्वयं सोच-विचार करेंगे और स्वतंत्र रूप से उनके उत्तर अपनी लेखन पुस्तिका में लिख सकेंगे। आवश्यकता होने पर इस कार्य में भी विद्यार्थियों को शिक्षकों का उत्साहवर्धन और सहयोग अपेक्षित है।

साहित्य की रचना— इस प्रश्न द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य की विधा-विशेष की विशेषताओं और संरचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान देने का अवसर मिलेगा। इसके लिए हो सकता है उन्हें पाठ को एक बार पुन: ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता का अनुभव हो। उन्हें पाठ की जो बातें विशेष लगेंगी, उन्हें वे आपस में साझा करेंगे और लिख लेंगे। इस प्रकार पूरी कक्षा की एक विस्तृत सूची तैयार हो जाएगी। उदाहरण के लिए, संभव है कि कविताओं में वे अलंकारों की शब्दावली या नामों के परिचय के बिना भी पहचान कर लें कि इस पंक्ति में तीन-चार शब्द एक ही अक्षर से शुरू हो रहे हैं। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यहाँ इस गतिविधि में भी एक उदाहरण दे दिया गया है।

अनुमान या कल्पना से— इस गतिविधि में पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिनके उत्तर पाठ में सीधे-सीधे नहीं मिल सकते हैं। इनके उत्तर खोजने के लिए विद्यार्थियों को पाठ के संदर्भों, अपनी कल्पना और अनुमान का सहारा लेना होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को विस्तार देने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होंगे।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 9 10/06/2024 14:10:12

शब्दों की बात— विद्यार्थियों का शब्द-भंडार बढ़ाना और भाषा-शब्दों का सार्थक उपयोग करने का कौशल विकसित करना भाषा शिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण कौशलों में से एक है। इसी दृष्टिकोण से यहाँ शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। यहाँ संदर्भगत व्याकरण की भी कुछ स्तरानुकूल अवधारणाएँ दे दी गई हैं। इन्हें करने के लिए विद्यार्थी शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

आपकी बात— जब हम किसी साहित्यिक रचना को अपने जीवन से जोड़ पाते हैं तो वह भी हमारे जीवन और अनुभव संसार का अभिन्न अंग बन जाती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को इस प्रश्न के अंतर्गत पाठ के संदर्भों को अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने के अवसर दिए गए हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलेंगे और इससे उनका भाषा की कक्षा से जुड़ाव और प्रबल हो सकेगा। ये प्रश्न मौखिक रूप से चर्चा और संवाद को कक्षा में स्थान देने की दिशा में एक और प्रभावशाली कदम हैं।

आज की पहेली— पहेलियाँ किसी भी भाषा के मौखिक और लिखित साहित्य का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। ये समाज, संस्कृति और इतिहास का अभिन्न अंग होती हैं। भारत की प्रत्येक भाषा के पास पहेलियों की अनूठी धरोहर और संपदा उपलब्ध है। इसी संपदा को हमारे विद्यार्थियों तक पहुँचाने के दृष्टिकोण से प्रत्येक पाठ में एक अनोखी और रोचक पहेली को हल करने का अवसर विद्यार्थियों को दिया गया है। इससे उन्हें स्वयं भी पहेलियों की रचना करने, उन्हें बूझने और उनका आनंद उठाने के अनुभव प्राप्त हो सकेंगे।

झरोखे से— भाषा की पुस्तक अपने आप में एक माध्यम है साहित्य की दुनिया की झलक विद्यार्थियों को दिखलाने का। यह झलक जितनी समृद्ध हो सके, उतना विद्यार्थियों के भाषाई विकास के लिए अच्छा होगा। भाषा की पाठ्यपुस्तक की कुछ सीमाएँ भी हैं। इसमें असीमित सामग्री को स्थान नहीं दिया जा सकता। इसी सीमा को कुछ असीम बनाने का प्रयास है झरोखा। यहाँ पाठ के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसी रचनाएँ दी गई हैं जो पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को और अधिक विस्तार दे सकेंगी। ये रचनाएँ ऐसे झरोखे हैं जिनसे झाँककर विद्यार्थी साहित्य की विशाल दुनिया का आनंद उठा सकेंगे। दूसरी ओर इन झरोखों के माध्यम से साहित्य, कक्षा और विद्यार्थियों के जीवन में प्रवेश पा सकेगा।

साझी समझ— झरोखे में दी गई रचनाओं को पढ़ने के बाद विद्यार्थी अवश्य ही उनके बारे में अपने विचार साझा करना चाहेंगे। ऐसे अवसर देता है गतिविधियों का यह भाग 'साझी समझ'।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 10 10/06/2024 14:10:12

इसके अंतर्गत 'झरोखे से' में दी गई रचनाओं के किसी विशेष पक्ष या पूरी रचना पर विद्यार्थी अपने-अपने समूह में चर्चा करेंगे और उसे कक्षा में सबके साथ साझा करेंगे।

पुस्तक को शिक्षण का आधार बनाते समय यह ध्यान देना होगा कि भाषा का परिदृश्य समय के साथ-साथ तेज़ी से बदल रहा है। भाषा के स्वरूप, उसके अध्ययन के उद्देश्य तथा शिक्षण के तौर-तरीकों से लेकर आकलन की पद्धतियों तक में नित नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए भाषा शिक्षण की पद्धतियों में नवीनता, विविधता व विस्तार लाने की आवश्यकता है। आज भाषा की कक्षा केवल कक्षा की चारदीवारी या पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं रह गई है बल्कि घर-परिवार, परिवेश, इंटरनेट और मीडिया के माध्यम से उसका विस्तार दूर तक हो चला है। सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के संदर्भ में इस विस्तार को समझने तथा इसके विविध आयामों को एक-दूसरे से जोड़ने की आवश्यकता है। भाषा शिक्षण के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भाषा ज्ञान की सतत प्रक्रिया हमारे पूरे परिवेश (जिसमें घर, पास-पड़ोस, सामाजिक समुदाय तथा विद्यालय सभी शामिल हैं) में चलती रहती है। यदि हम भाषा की कक्षा को बाहरी परिवेश में उपलब्ध सीखने के अवसरों से सीधे जोड़ सकें तो भाषा शिक्षण के लक्ष्यों को बखूबी प्राप्त किया जा सकता है।

संध्या सिंह
प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं
संयोजक, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, हिंदी
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 11 13/06/2024 14:34:36

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (**अध्यक्ष**)

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (**सह-अध्यक्ष**)

सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठित लेखिका* एवं *शिक्षाविद*

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठित प्रोफेसर,* सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *विज़िटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी., गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज़, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर,* योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (**सदस्य-सचिव**)

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 13 10/06/2024 14:10:13

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

मार्गदर्शन

महेश चंद्र पंत, *अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समूह, (एन.एस.टी.सी.) तथा भाषा समूह

मञ्जुल भार्गव, *सह-अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समूह, (एन.एस.टी.सी.) तथा भाषा समूह

अध्यक्ष, उप-समूह (हिंदी)

चमन लाल गुप्त, *प्रोफेसर* एवं *पूर्व अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

सहयोग

अक्षय कुमार दीक्षित, *हिंदी अध्यापक*, आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

अनुराधा, *हिंदी शिक्षक (अवकाश प्राप्त)*, सरदार पटेल विद्यालय, लोधी स्टेट, नई दिल्ली

आर.एस. सर्राजु, *प्रोफेसर,* हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

नंद किशोर पाण्डेय, *प्रोफेसर*, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

नीरा नारंग, *प्रोफेसर,* शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

नीलकंठ कुमार, *असिस्टेंट प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रणय कुमार, *अध्यक्ष,* हिंदी, संस्कृत विभाग, एल.के. सिंघानिया एजूकेशन सेंटर, गोटन

मंजरी शुक्ला, *लेखक,* प्रयागराज

मृदुल कीर्ति, *लेखक,* मेरठ

मैथिली प्र. राव, *शिक्षाविद एवं अनुवादक,* बेंगलुरु

राम प्रसाद भट्ट, हैमबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

विश्वामित्र दायमा, *शिक्षक,* राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, लालपुरा, चित्तौड़गढ़

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 15 14/06/2024 10:15:48

शचींद्र आर्य, *अध्यापक*, राजकीय सह-शिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (गाँधी) ब्रह्मपुरी, नई दिल्ली

शारदा कुमारी, *प्राचार्य* (सेवानिवृत्त), डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, सेक्टर-7, नई दिल्ली

शिव शरण कौशिक, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष,* हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर

श्याम सिंह सुशील, *लेखक,* हिंदी, ए-13, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली

साकेत बहुगुणा, *सहायक प्रोफेसर,* केंद्रीय हिंदी संस्थान-दिल्ली केंद्र, नई दिल्ली

सुमन कुमार सिंह, *शिक्षक,* गवर्मेंट सेकेण्डरी स्कूल कौड़िया, वसंती भगवानपुर हाट, सिवान

सैयद मतीन अहमद, *अध्यक्ष,* हिंदी, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना

सदस्य-समन्वयक एवं संयोजक

संध्या सिंह, *प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग एवं संयोजक पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (हिंदी भाषा उप-समूह), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य सह-समन्वयक

नरेश कोहली, *एसोसिएट प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

@KREBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 16 10/06/2024 14:10:14

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह भाषा के सभी सदस्यों तथा अन्य अंत:संबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

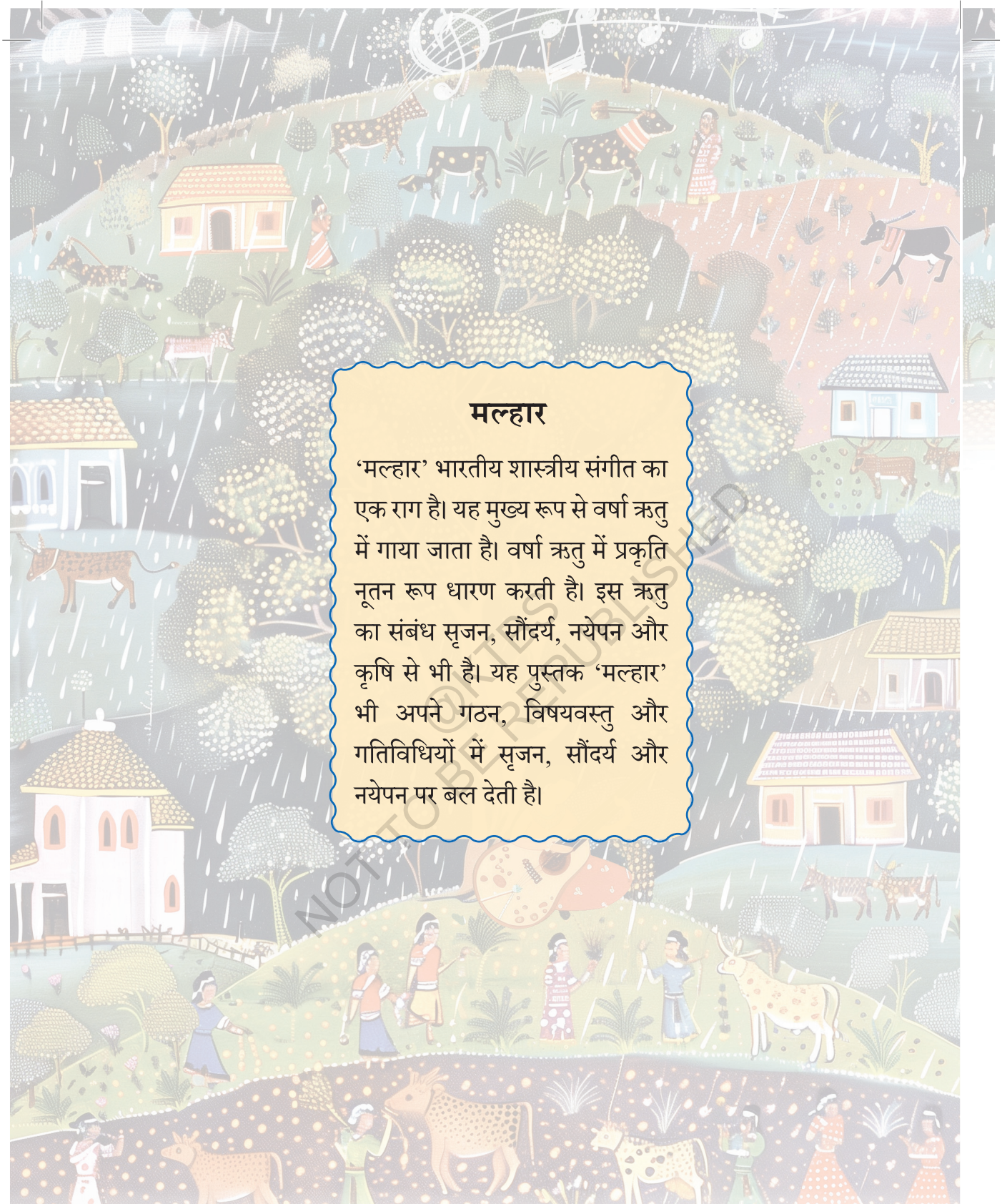
इस पुस्तक के निर्माण में जिन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उसकी स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं उनसे संबद्ध प्रकाशकों के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, भाषा शिक्षा विभाग के वंदना शर्मा, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, गिरीश कुमार तिवारी, *असिस्टेंट प्रोफेसर*; रमेश कुमारी, *वरिष्ठ शोध सहायक*; *कनिष्ठ परियोजना अध्येता* सुनीत मिश्र, शुभम सिंह, प्रिया और सत्यम सिंह; तकनीकी सहयोग हेतु संविदा पर कार्यरत *डी.टी.पी. ऑपरेटर* अमजद हुसैन और फरहीन फातिमा तथा संविदा पर कार्यरत *प्रूफ रीडर* सोनम सिंह और राम भवन यादव का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद् इस पाठ्यपुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए प्रकाशन प्रभाग के प्रति आभारी है। परिषद् पाठ्यपुस्तक के संपादन के लिए दिनेश वशिष्ट, *संपादक* (संविदा); प्रियंका, *प्रूफरीडर* (संविदा) और पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप से तैयार करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; संविदा पर कार्यरत *डी.टी.पी. ऑपरेटर* राजश्री सैनी और बिट्टू कुमार महतो, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति भी आभार प्रकट करती है।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 17 27/08/2024 10:24:38



मल्हार

'मल्हार' भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक राग है। यह मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में गाया जाता है। वर्षा ऋतु में प्रकृति नूतन रूप धारण करती है। इस ऋतु का संबंध सृजन, सौंदर्य, नयेपन और कृषि से भी है। यह पुस्तक 'मल्हार' भी अपने गठन, विषयवस्तु और गतिविधियों में सृजन, सौंदर्य और नयेपन पर बल देती है।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 18 10/06/2024 14:10:15

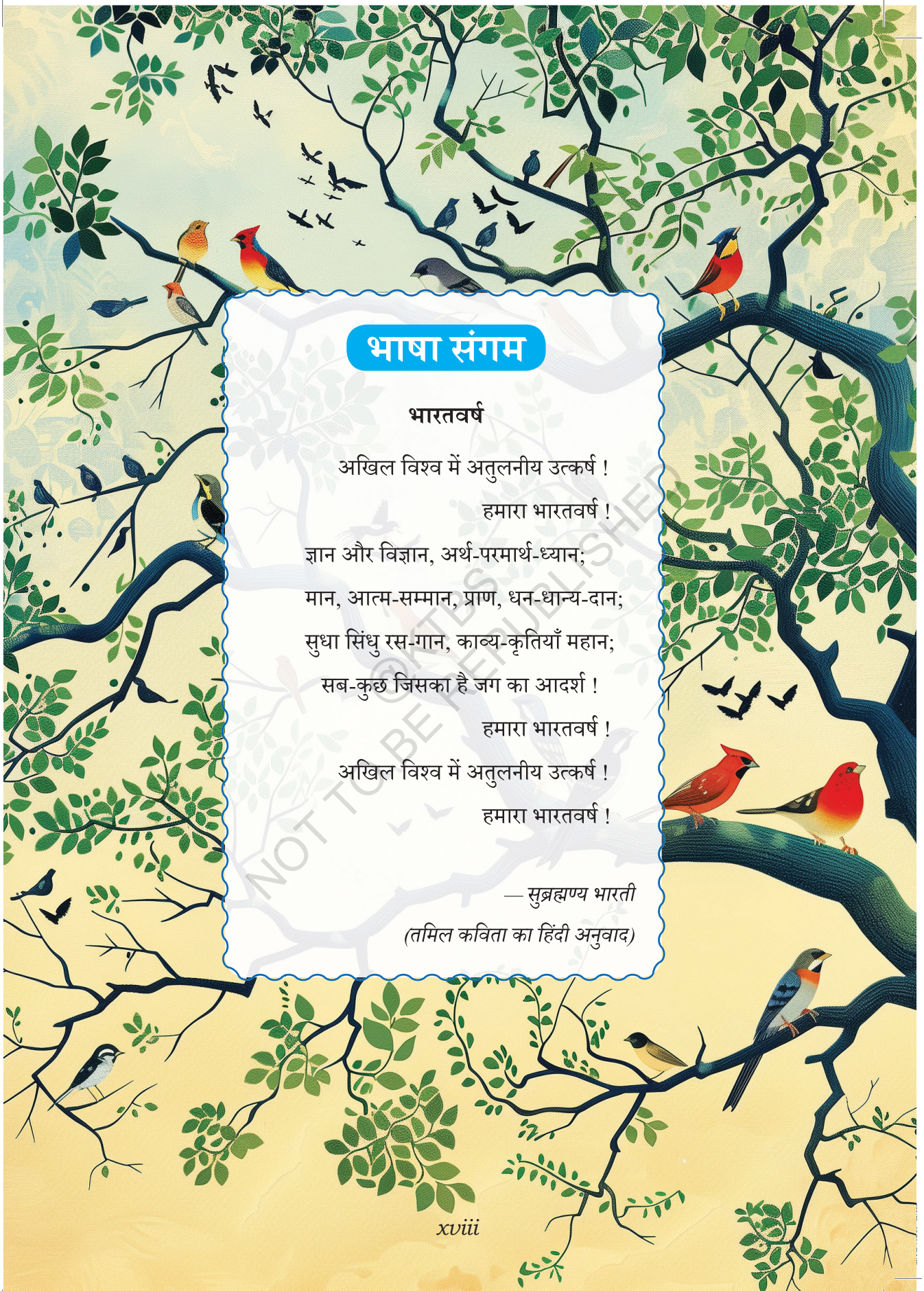


विषय-क्रम

	आमुख		*ii*
	यह पुस्तक		*iv*
	भाषा संगम		*xviii*
	(तमिल कविता का हिंदी अनुवाद)		
1.	मातृभूमि (कविता)	*सोहनलाल द्विवेदी*	1
	पुष्प की अभिलाषा (पढ़ने के लिए)	*माखनलाल चतुर्वेदी*	12
2.	गोल (संस्मरण)	*मेजर ध्यानचंद*	13
	एक दौड़ ऐसी भी (पढ़ने के लिए)		24
3.	पहली बूँद (कविता)	*गोपालकृष्ण कौल*	25
4.	हार की जीत (कहानी)	*सुदर्शन*	33
5.	रहीम के दोहे (दोहा)	*अब्दुर्रहीम खानखाना*	45
6.	मेरी माँ (आत्मकथा)	*रामप्रसाद 'बिस्मिल'*	51
7.	जलाते चलो (कविता)	*द्वारिका प्रसाद 'माहेश्वरी'*	60
	आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की (पढ़ने के लिए)	*कवि प्रदीप*	75
	शब्दकोश		77
	पहेलियों के उत्तर		85
	'ब्रेल भारती' हिंदी वर्ण व गिनती		86

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 19 27/08/2024 10:25:47



भाषा संगम

भारतवर्ष

अखिल विश्व में अतुलनीय उत्कर्ष !
हमारा भारतवर्ष !
ज्ञान और विज्ञान, अर्थ-परमार्थ-ध्यान;
मान, आत्म-सम्मान, प्राण, धन-धान्य-दान;
सुधा सिंधु रस-गान, काव्य-कृतियाँ महान;
सब-कुछ जिसका है जग का आदर्श !
हमारा भारतवर्ष !
अखिल विश्व में अतुलनीय उत्कर्ष !
हमारा भारतवर्ष !

— सुब्रह्मण्य भारती

(तमिल कविता का हिंदी अनुवाद)

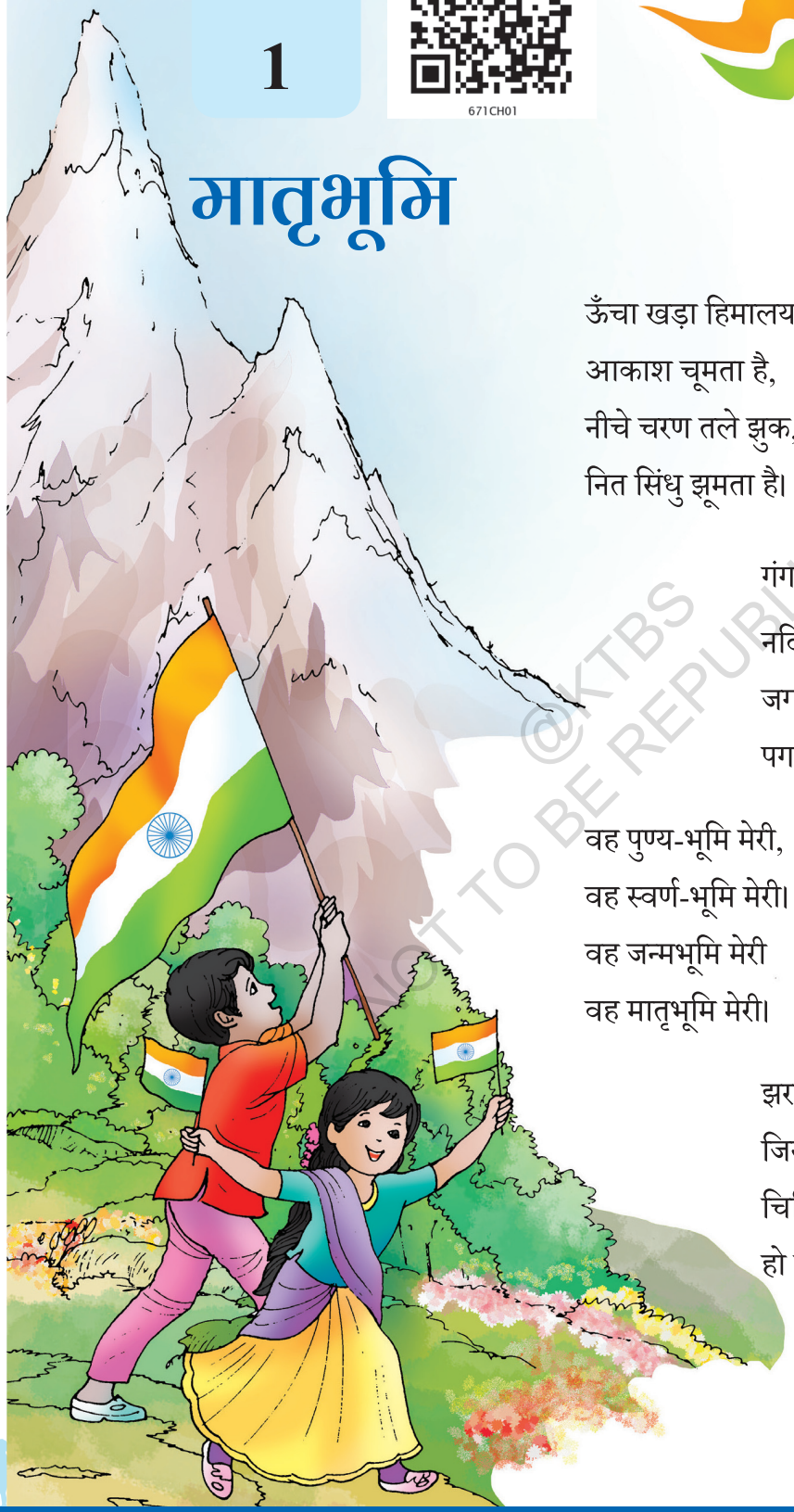
© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Prelims.indd 20 10/06/2024 14:10:16

1

671CH01

मातृभूमि



ऊँचा खड़ा हिमालय
आकाश चूमता है,
नीचे चरण तले झुक,
नित सिंधु झूमता है।

गंगा यमुन त्रिवेणी
नदियाँ लहर रही हैं,
जगमग छटा निराली,
पग पग छहर रही हैं।

वह पुण्य-भूमि मेरी,
वह स्वर्ण-भूमि मेरी।
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी।

झरने अनेक झरते
जिसकी पहाड़ियों में,
चिड़ियाँ चहक रही हैं,
हो मस्त झाड़ियों में।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

अमराइयाँ घनी हैं
कोयल पुकारती है,
बहती मलय पवन है,
तन-मन सँवारती है।

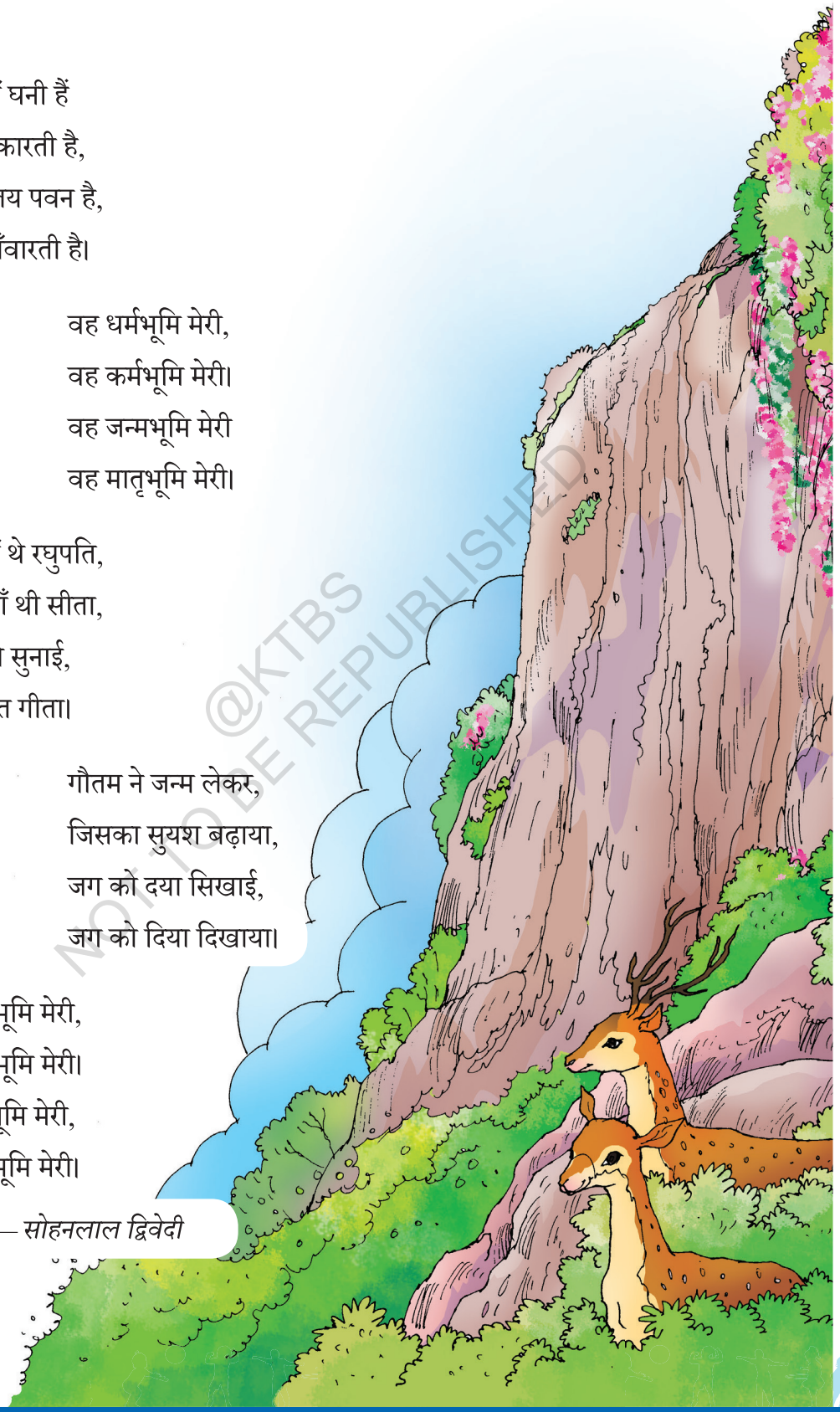
वह धर्मभूमि मेरी,
वह कर्मभूमि मेरी।
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी।

जन्मे जहाँ थे रघुपति,
जन्मी जहाँ थी सीता,
श्रीकृष्ण ने सुनाई,
वंशी पुनीत गीता।

गौतम ने जन्म लेकर,
जिसका सुयश बढ़ाया,
जग को दया सिखाई,
जग को दिया दिखाया।

वह युद्ध-भूमि मेरी,
वह बुद्ध-भूमि मेरी।
वह मातृभूमि मेरी,
वह जन्मभूमि मेरी।

— सोहनलाल द्विवेदी



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 1.indd 2 10/06/2024 11:09:07

कवि से परिचय



(1906–1988)

इस कविता को हिंदी के प्रसिद्ध कवियों में से एक सोहनलाल द्विवेदी जी ने लिखा है। उनका जन्म आज से लगभग सवा सौ साल पहले हुआ था। उस समय अंग्रेजों का भारत पर आधिपत्य था। उन्होंने अपनी लेखनी से अंग्रेज़ों का विरोध किया। उनकी लेखनी का सबसे प्रिय विषय था 'देशभक्ति'। भारत के गौरव का गान करना उन्हें बहुत प्रिय था। उनकी कुछ और चर्चित रचनाएँ हैं— 'बढ़े चलो, बढ़े चलो', 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' आदि।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) हिंद महासागर के लिए कविता में कौन-सा शब्द आया है?

- चरण
- हिमालय
- वंशी
- सिंधु

(2) मातृभूमि कविता में मुख्य रूप से—

- भारत की प्रशंसा की गई है।
- भारत के महापुरूषों की जय की गई है।
- भारत की प्राकृतिक सुंदरता की सराहना की गई है।
- भारतवासियों की वीरता का बखान किया गया है।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 1.indd 3 10/06/2024 11:09:08



मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. हिमालय	1. एक प्रसिद्ध महापुरुष, बौद्ध धर्म के प्रवर्तक।
2. त्रिवेणी	2. वसुदेव के पुत्र वासुदेव।
3. मलय पवन	3. भारत की प्रसिद्ध नदियाँ।
4. सिंधु	4. तीन नदियों की मिली हुई धारा, संगम।
5. गंगा-यमुना	5. श्री रामचंद्र का एक नाम, दशरथ के पुत्र।
6. रघुपति	6. दक्षिणी भारत के मलय पर्वत से चलने वाली सुगंधित वायु।
7. श्रीकृष्ण	7. एक प्रसिद्ध और प्राचीन ग्रंथ 'श्रीमद्भगवदगीता', इसमें वे प्रश्न-उत्तर और संवाद हैं जो महाभारत में श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच हुए थे।
8. सीता	8. समुद्र, एक नदी का नाम।
9. गीता	9. जनक की पुत्री जानकी।
10. गौतम बुद्ध	10. भारत की उत्तरी सीमा पर फैली पर्वत-माला।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार कक्षा में अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

"वह युद्ध-भूमि मेरी, वह बुद्ध-भूमि मेरी।
वह मातृभूमि मेरी, वह जन्मभूमि मेरी।"

Chapter 1.indd 4 13/06/2024 14:37:03



सोच-विचार के लिए

(क) कविता को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

1. कोयल कहाँ रहती है?
2. तन-मन कौन सँवारती है?
3. झरने कहाँ से झरते हैं?
4. श्रीकृष्ण ने क्या सुनाया था?
5. गौतम ने किसका यश बढ़ाया?

(ख) "नदियाँ लहर रही हैं
पग पग छहर रही हैं"

'लहर' का अर्थ होता है— पानी का हिलोरा, मौज, उमंग, वेग, जोश
'छहर' का अर्थ होता है— बिखरना, छितराना, छिटकना, फैलना
कविता पढ़कर पता लगाइए और लिखिए—

- कहाँ-कहाँ छटा छहर रही हैं?
- किसका पानी लहर रहा है?

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



कविता की रचना

"गंगा यमुन त्रिवेणी
नदियाँ लहर रही हैं"

'यमुन' शब्द यहाँ 'यमुना' नदी के लिए आया है। कभी-कभी कवि कविता की लय और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए इस प्रकार से शब्दों को थोड़ा बदल देते हैं। यदि आप कविता को थोड़ा और ध्यान से पढ़ेंगे तो आपको और भी बहुत-सी विशेषताएँ पता चलेंगी। आपको जो विशेष बातें दिखाई दें, उन्हें आपस में साझा कीजिए और लिखिए। जैसे सबसे ऊपर इस कविता का एक शीर्षक है।



मिलान

स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलते-जुलते भाव वाली पंक्तियों को रेखा खींचकर जोड़िए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. वह जन्मभूमि मेरी वह मातृभूमि मेरी।	1. यहाँ आम के घने उद्यान हैं जिनमें कोयल आदि पक्षी चहचहा रहे हैं।
2. चिड़ियाँ चहक रही हैं, हो मस्त झाड़ियों में।	2. मैंने उस भूमि पर जन्म लिया है। वह भूमि मेरी माँ समान है।
3. अमराइयाँ घनी हैं कोयल पुकारती है	3. वहाँ की जलवायु इतनी सुखदायी है कि पक्षी पेड़-पौधों के बीच प्रसन्नता से गीत गा रहे हैं।



अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) "अमराइयाँ घनी हैं
कोयल पुकारती है"
कोयल क्यों पुकार रही होगी? किसे पुकार रही होगी? कैसे पुकार रही होगी?

(ख) "बहती मलय पवन है,
तन मन सँवारती है"
पवन किसका तन-मन सँवारती है? वह यह कैसे करती है?



शब्दों के रूप

नीचे शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए आप शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

(क) नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़िए—

"जगमग छटा निराली,
पग पग छहर रही हैं"

इन पंक्तियों में 'पग' शब्द दो बार आया है। इसका अर्थ है 'हर पग' या 'हर कदम' पर।

शब्दों के ऐसे ही कुछ जोड़े नीचे दिए गए हैं। इनके अर्थ लिखिए—

© CTBS
NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 1.indd 6 10/06/2024 11:09:10

घर-घर ----------

बाल-बाल ----------

साँस-साँस ----------

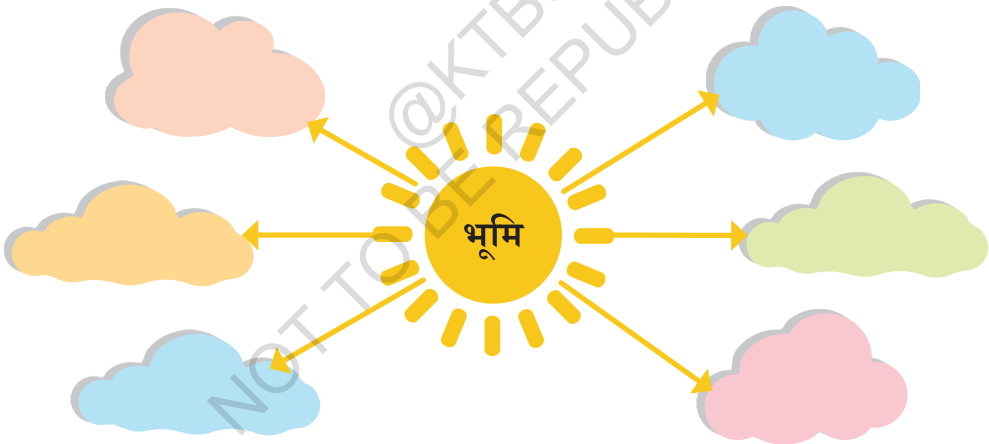
देश-देश ----------

पर्वत-पर्वत ----------

(ख) "वह युद्ध-भूमि मेरी
वह बुद्ध-भूमि मेरी"

कविता में 'भूमि' शब्द में अलग-अलग शब्द जोड़कर नए-नए शब्द बनाए गए हैं। आप भी कुछ नए शब्द बनाइए और उनके अर्थ पता कीजिए—

(संकेत— तप, देव, भारत, जन्म, कर्म, कर्तव्य, मरु, मलय, मल्ल, यज्ञ, रंग, रण, सिद्ध आदि)



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



थोड़ा भिन्न, थोड़ा समान

नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़िए—

"जग को दया सिखाई,
जग को दिया दिखाया।"

Chapter 1.indd 7 10/06/2024 11:09:10

'दया' और 'दिया' में केवल एक मात्रा का अंतर है, लेकिन इस एक मात्रा के कारण शब्द का अर्थ पूरी तरह बदल गया है। आप भी अपने समूह में मिलकर ऐसे शब्दों की सूची बनाइए जिनमें केवल एक मात्रा का अंतर हो, जैसे घड़ा-घड़ी।

पाठ से आगे



आपकी बात

(क) इस कविता में भारत का सुंदर वर्णन किया गया है। आप भारत के किस स्थान पर रहते हैं? वह स्थान आपको कैसा लगता है? उस स्थान की विशेषताएँ बताइए।

(संकेत— प्रकृति, खान-पान, जलवायु, प्रसिद्ध स्थान आदि)

(ख) अपने परिवार के किसी सदस्य या मित्र के बारे में लिखिए। उसकी कौन-कौन सी बातें आपको अच्छी लगती हैं?



वंशी-से

"श्रीकृष्ण ने सुनाई,
वंशी पुनीत गीता"

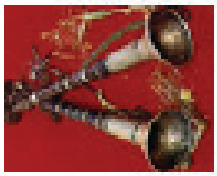
'वंशी' बाँसुरी को कहते हैं। यह मुँह से फूँक कर बजाया जाने वाला एक 'वाद्य' यानी बाजा है। नीचे फूँक कर बजाए जाने वाले कुछ वाद्यों के चित्र दिए गए हैं। इनके नाम शब्द-जाल से खोजिए और सही चित्र के नीचे लिखिए।

वाद्यों के नामों का शब्द-जाल

श	ह	ना	ई	बाँ
अ	भं	द	शं	सु
ल	को	स्व	ख	री
गो	रा	र	बी	न
जा		म	सीं	गी

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 1.indd 8 10/06/2024 11:09:10






अ _____ बी _____ बाँ _____ सीं _____






श _____ ना _____ भं _____ शं _____



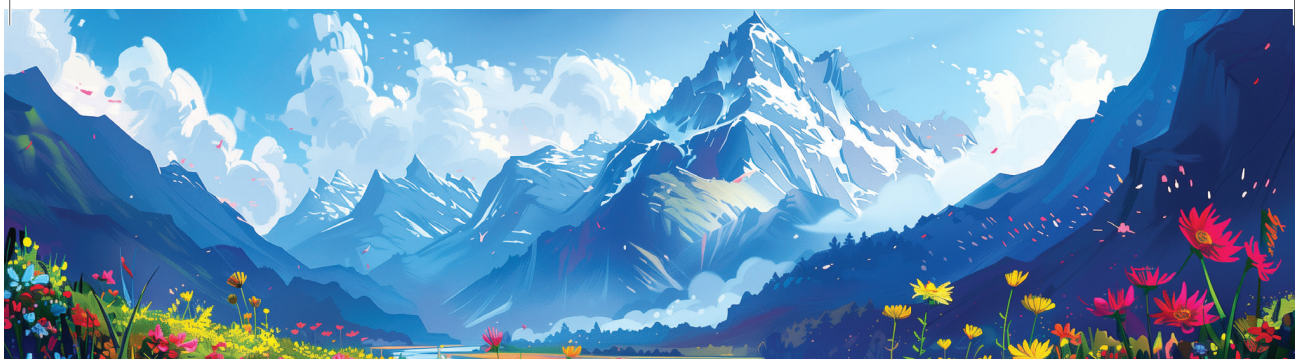
आज की पहेली

आज हम आपके लिए एक अनोखी पहेली लाए हैं। नीचे कुछ अक्षर दिए गए हैं। आप इन्हें मिलाकर कोई सार्थक शब्द बनाइए। अक्षरों को आगे-पीछे किया जा सकता है यानी उनका क्रम बदला जा सकता है। आप अपने मन से किसी भी अक्षर के साथ कोई मात्रा भी लगा सकते हैं। पहला शब्द हमने आपके लिए पहले ही बना दिया है।

क्रम संख्या	अक्षर	शब्द
1	स म ह ग र	महासागर
2	ह म य ल	_____
3	ग ग	_____
4	भ त र	_____
5	ल क य	_____
6	व न प	_____

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 1.indd 9 10/06/2024 11:09:11





झरोखे से

आप अपने विद्यालय में 'वंदे मातरम्' गाते होंगे। 'वंदे मातरम्' बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचा गया था। यह गीत स्वतंत्रता की लड़ाई में लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत था। भारत में इसका स्थान 'जन गण मन' के समान है। क्या आप इसका अर्थ जानते-समझते हैं? आइए, आज हम पहले इसका अर्थ समझ लेते हैं, फिर समूह में चर्चा करेंगे–

वंदे मातरम्	भावार्थ
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!	हे माता, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ!
सुजलाम्, सुफलाम्,	तुम जल से भरी हुई हो, फलों से परिपूर्ण हो,
मलयज शीतलाम्,	तुम्हें मलय से आती हुई पवन शीतलता प्रदान करती है,
शस्यश्यामलाम्, मातरम्!	तुम अन्न के खेतों से परिपूर्ण वंदनीय माता हो!
वंदे मातरम्!	हे माँ मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ!
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनीम्,	जिसकी रमणीय रात्रि को चंद्रमा का प्रकाश शोभायमान करता है,
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,	जो खिले हुए फूलों के पेड़ों से सुसज्जित है,
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,	सदैव हँसने वाली, मधुर भाषा बोलने वाली,
सुखदाम् वरदाम्, मातरम्! वंदे मातरम्, वंदे मातरम्॥	सुख देने वाली, वरदान-देने वाली माँ, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ!

© IGNOU NOT TO BE REPUBLISHED

आप नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी पर इसे संगीत के साथ सुन भी सकते हैं—
https://knowindia.india.gov.in/hindi/national-identity-elements/national-song.php



साझी समझ

आपने 'मातृभूमि' कविता को भी पढ़ा और 'वंदे मातरम्' को भी। अब कक्षा में चर्चा कीजिए और पता लगाइए कि इन दोनों में कौन-कौन सी बातें एक जैसी हैं और कौन-कौन सी बातें कुछ अलग हैं।



खोजबीन के लिए

नीचे पाठ से संबंधित कुछ रचनाएँ दी गई हैं, इन्हें पुस्तक में दिए गए क्यू.आर.कोड की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें।

- स्वाधीनता की सरगम— वंदना के इन स्वरों में
- ना हाथ एक शस्त्र हो
- पुष्प की अभिलाषा
- यह महिमामय अपना भारत

@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 1.indd 11 10/06/2024 11:09:12



पढ़ने के लिए

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ देना वनमाली!
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।

— *माखनलाल चतुर्वेदी*

© CBSE NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 1.indd 12 10/06/2024 11:09:13

2

671CH02



गोल

इस पाठ का नाम पढ़कर आपके मन में कुछ गोल वस्तुओं के नाम या चित्र उभरे होंगे, गोल गेंद, गोल रोटी, गोल चंद्रमा आदि। लेकिन यह पाठ एक विशेष प्रकार के गोल और उसे करने वाले के बारे में है। यह पाठ एक प्रसिद्ध खिलाड़ी के संस्मरण का एक अंश है। आइए, इसे पढ़ते हैं और जानते हैं कि कौन थे वे प्रसिद्ध खिलाड़ी!

खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं। खेल में तो यह सब चलता ही है। जिन दिनों हम खेला करते थे, उन दिनों भी यह सब चलता था।

सन् 1933 की बात है। उन दिनों मैं, मैं पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था। एक दिन 'पंजाब रेजिमेंट' और 'सैपर्स एंड माइनर्स टीम' के बीच मुकाबला हो रहा था। 'माइनर्स टीम' के खिलाड़ी मुझसे गेंद छीनने की कोशिश करते, लेकिन उनकी हर कोशिश बेकार जाती। इतने में एक खिलाड़ी ने गुस्से में आकर हॉकी स्टिक मेरे सिर पर दे मारी। मुझे मैदान से बाहर ले जाया गया।

थोड़ी देर बाद मैं पट्टी बाँधकर फिर मैदान में आ पहुँचा। आते ही मैंने उस खिलाड़ी की पीठ पर हाथ रखकर कहा, "तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूँगा।" मेरे इतना कहते ही वह खिलाड़ी घबरा गया। अब हर समय मुझे ही देखता रहता कि मैं कब उसके सिर पर हॉकी स्टिक मारने वाला हूँ। मैंने एक के बाद एक झटपट छह गोल कर दिए। खेल खत्म होने के बाद मैंने फिर उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाई और कहा, "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।" वह खिलाड़ी सचमुच बड़ा शर्मिंदा हुआ। तो देखा आपने मेरा बदला लेने का ढंग? सच मानो, बुरा काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

आज मैं जहाँ भी जाता हूँ बच्चे व बूढ़े मुझे घेर लेते हैं और मुझसे मेरी सफलता का राज जानना चाहते हैं। मेरे पास सफलता का कोई गुरु-मंत्र तो है नहीं। हर किसी से यही कहता कि लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।

मेरा जन्म सन् 1904 में प्रयाग में एक साधारण परिवार में हुआ। बाद में हम झाँसी आकर बस गए। 16 साल की उम्र में मैं 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हो गया। मेरी रेजिमेंट का हॉकी खेल में काफी नाम था। पर खेल में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। उस समय हमारी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर तिवारी थे। वे बार-बार मुझे हॉकी खेलने के लिए कहते। हमारी छावनी में हॉकी खेलने का कोई निश्चित समय नहीं था। सैनिक जब चाहे मैदान में पहुँच जाते और अभ्यास शुरू कर देते। उस समय तक मैं एक नौसिखिया खिलाड़ी था।

जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई। सन् 1936 में बर्लिन ओलंपिक में मुझे कप्तान बनाया गया। उस समय मैं सेना में लांस नायक था। बर्लिन ओलंपिक में लोग मेरे हॉकी खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे 'हॉकी का जादूगर' कहना शुरू कर दिया। इसका यह मतलब नहीं कि सारे गोल मैं ही करता था। मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



Chapter 2.indd 14 10/06/2024 11:19:11



भारतीय हॉकी टीम ने 1936 के बर्लिन ओलंपिक में जीत दर्ज की।

जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया। बर्लिन ओलंपिक में हमें स्वर्ण पदक मिला। खेलते समय मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखता था कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।

— *मेजर ध्यानचंद*

© KTRS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 2.indd 15 10/06/2024 11:19:11

लेखक से परिचय



(1905–1979)

यदि कोई खिलाड़ी अपनी आत्मकथा का नाम 'गोल' रखे, तो इस नाम को पढ़कर इतना तो तुरंत समझ में आ जाता है कि उसे खेल से कितना प्यार रहा होगा। जी हाँ, वे अमर खिलाड़ी हैं 'हॉकी के जादूगर' कहे जाने वाले मेजर ध्यानचंद। इतने महान कि भारत उनके जन्मदिन को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाता है, जिससे लाखों भारतवासी उनके जीवन से प्रेरणा ले सकें। इतने महान खिलाड़ी कि भारत का सर्वोच्च खेल पुरस्कार 'खेल रत्न' उनके नाम पर दिया जाता है।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।" मेजर ध्यानचंद की इस बात से उनके बारे में क्या पता चलता है?

- वे अत्यंत क्रोधी थे।
- वे अच्छे ढंग से बदला लेते थे।
- उन्हें हॉकी से मारने पर वे अधिक गोल करते थे।
- वे जानते थे कि खेल को सही भावना से खेलना चाहिए।

(2) लोगों ने मेजर ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहना क्यों शुरू कर दिया?

- उनके हॉकी खेलने के विशेष कौशल के कारण
- उनकी हॉकी स्टिक की अनोखी विशेषताओं के कारण
- हॉकी के लिए उनके विशेष लगाव के कारण
- उनकी खेल भावना के कारण

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 2.indd 16 10/06/2024 11:19:12



मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. लांस नायक	1. स्वतंत्रता से पहले सूबेदार भारतीय सैन्य अधिकारियों का दूसरा सबसे बड़ा पद था।
2. बर्लिन ओलंपिक	2. भारतीय सेना का एक पद (रैंक) है।
3. पंजाब रेजिमेंट	3. सैनिकों के रहने का क्षेत्र।
4. सैंपर्स एंड माइनर्स टीम	4. वर्ष 1936 में जर्मनी के बर्लिन शहर में आयोजित ओलंपिक खेल प्रतियोगिता, जिसमें 49 देशों ने भाग लिया था।
5. सूबेदार	5. स्वतंत्रता से पहले अंग्रेज़ों की भारतीय सेना का एक दल।
6. छावनी	6. अंग्रेज़ों के समय का एक हॉकी दल।



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार कक्षा में अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(क) "बुरा काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी।"

(ख) "मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया।"

© KTES NOT TO BE REPUBLISHED



सोच-विचार के लिए

संस्मरण को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

(क) ध्यानचंद की सफलता का क्या रहस्य था?

(ख) किन बातों से ऐसा लगता है कि ध्यानचंद स्वयं से पहले दूसरों को रखते थे?



संस्मरण की रचना

"उन दिनों में मैं, पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था।"

इस वाक्य को पढ़कर ऐसा लगता है मानो लेखक आपसे यानी पाठक से अपनी यादों को साझा कर रहा है। ध्यान देंगे तो इस पाठ में ऐसी और भी अनेक विशेष बातें आपको दिखाई देंगी। इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए।

(क) अपने-अपने समूह में मिलकर इस संस्मरण की विशेषताओं की सूची बनाइए।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।



शब्दों के जोड़े, विभिन्न प्रकार के

(क) "जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई।"

इस वाक्य में 'जैसे-जैसे' और 'वैसे-वैसे' शब्दों के जोड़े हैं जिनमें एक ही शब्द दो बार उपयोग में लाया गया है। ऐसे जोड़ों को 'शब्द-युग्म' कहते हैं। शब्द-युग्म में दो शब्दों के बीच में छोटी-सी रेखा लगाई जाती है जिसे योजक चिह्न कहते हैं। योजक यानी जोड़ने वाला।

आप भी ऐसे पाँच शब्द-युग्म लिखिए।

(ख) "खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं।"

इस वाक्य में भी आपको दो शब्द-युग्म दिखाई दे रहे हैं, लेकिन इन शब्द-युग्मों के दोनों शब्द भिन्न-भिन्न हैं, एक जैसे नहीं हैं। आप भी ऐसे पाँच शब्द-युग्म लिखिए जिनमें दोनों शब्द भिन्न-भिन्न हों।

(ग) "हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।"

"आज मैं जहाँ भी जाता हूँ बच्चे व बूढ़े मुझे घेर लेते हैं।"

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

इन वाक्यों में जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उन्हें ध्यान से पढ़िए। हम इन शब्दों को योजक की सहायता से भी लिख सकते हैं, जैसे— हार-जीत, बच्चे-बूढ़े आदि।
आप नीचे दिए गए शब्दों को योजक की सहायता से लिखिए—

- अच्छा या बुरा
- छोटा या बड़ा
- अमीर और गरीब
- उत्तर और दक्षिण
- गुरु और शिष्य
- अमृत या विष



बात पर बल देना

"मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है।"
"मैंने तो अपना बदला ले लिया है।"

इन दोनों वाक्यों में क्या अंतर है? ध्यान दीजिए और बताइए। सही पहचाना! दूसरे वाक्य में एक शब्द कम है। उस एक शब्द के न होने से वाक्य के अर्थ में भी थोड़ा अंतर आ गया है।

हम अपनी बात पर बल देने के लिए कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग करते हैं जैसे— 'ही', 'भी', 'तो' आदि। पाठ में से इन शब्दों वाले वाक्यों को चुनकर लिखिए। ध्यान दीजिए कि यदि उन वाक्यों में ये शब्द न होते तो उनके अर्थ पर इसका क्या प्रभाव पड़ता।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

पाठ से आगे



आपकी बात

(क) ध्यानचंद के स्थान पर आप होते तो क्या आप बदला लेते? यदि हाँ, तो बताइए कि आप बदला किस प्रकार लेते?

(ख) आपको कौन-से खेल और कौन-से खिलाड़ी सबसे अधिक अच्छे लगते हैं? क्यों?



समाचार-पत्र से

(क) क्या आप समाचार-पत्र पढ़ते हैं? समाचार-पत्रों में प्रतिदिन खेल के समाचारों का एक पृष्ठ प्रकाशित होता है। अपने घर या पुस्तकालय से पिछले सप्ताह के समाचार पत्रों को देखिए। अपनी पसंद का एक खेल-समाचार अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

Chapter 2.indd 19 10/06/2024 11:19:14

(ख) मान लीजिए कि आप एक खेल-संवाददाता हैं और किसी खेल का आँखों देखा प्रसारण कर रहे हैं। अपने समूह के साथ मिलकर कक्षा में उस खेल का आँखों देखा हाल प्रस्तुत कीजिए। (संकेत— इस कार्य में आप आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले खेल-प्रसारणों की कमेंटरी की शैली का उपयोग कर सकते हैं। बारी-बारी से प्रत्येक समूह कक्षा में सामने डेस्क या कुर्सियों पर बैठ जाएगा और पाँच मिनट के लिए किसी खेल के सजीव प्रसारण की कमेंटरी का अभिनय करेगा।)



डायरी का प्रारंभ

कुछ लोग प्रतिदिन थोड़ी-थोड़ी बातें किसी स्थान पर लिख लेते हैं। जो वे सोचते हैं, या जो उनके साथ उस दिन हुआ या जो उन्होंने देखा, उसे ईमानदारी से लिख लेते हैं या टाइप कर लेते हैं। इसे डायरी लिखना कहते हैं।

क्या आप भी अपने मन की बातों और विचारों को लिखना चाहते हैं? यदि हाँ, तो आज से ही प्रारंभ कर दीजिए—

- आप जहाँ लिखेंगे, वह माध्यम चुन लीजिए। आप किसी लेखन-पुस्तिका में या ऑनलाइन मंचों पर लिख सकते हैं।
- आप प्रतिदिन, कुछ दिनों में एक बार या जब कुछ लिखने का मन करे तब लिख सकते हैं।
- शब्दों या वाक्यों की कोई सीमा नहीं है चाहे दो वाक्य हों या दो पृष्ठ। आप जो मन में आए उसे उचित और शालीन शब्दों में लिख सकते हैं।



आज की पहेली

यहाँ एक रोचक पहेली दी गई है। इसमें आपको तीन खिलाड़ी दिखाई दे रहे हैं। आपको पता लगाना है कि कौन-से खिलाड़ी द्वारा गोल किया जाएगा—

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 2.indd 20 10/06/2024 11:19:15



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



झरोखे से

आपने हॉकी के बारे में बहुत-कुछ बात की होगी। अब हम हॉकी जैसे ही अनोखे खेल के बारे में पढ़ेंगे जिसे आप जैसे लाखों बच्चे अपने गली-मुहल्लों में खेलते हैं। इस खेल का नाम है— डाँडी या गोथा।

Chapter 2.indd 21 27/08/2024 10:27:26

डाँडी या गोथा

यह भील-भिलाला बच्चों का खेल है। 'डाँडी' और 'गोथा' शब्द का अर्थ एक ही है— खेलने की हाथ-लकड़ी। देखा जाए तो यह खेल काफी-कुछ हमारे राष्ट्रीय खेल हॉकी जैसा है। अंतर बस इतना है कि हॉकी में गोल करने के लिए गोलपोस्ट होते हैं, जबकि इस खेल में ऐसा कोई निर्धारण नहीं है। दूसरा अंतर यह है कि भील-भिलाला बच्चों की यह गेंद, हॉकी की अपेक्षा एकदम साधारण होती है। यह बाँस की बनी होती है।

खेल सामग्री

1. बाँस के गुट्टे की गेंद जिसे 'दुईत' कहते हैं।
2. 'गोथा' यानी अंग्रेजी के 'L' अक्षर की तरह नीचे से मुड़ी हुई बाँस की डंडियाँ।
3. राख से खेल के मैदान में सीमांकन करना और घेरे के भीतर एक छोटा वृत्त बनाना।

कैसे खेलें



1. वैसे तो इसे चाहे जितने खिलाड़ी खेल सकते हैं, मगर दोनों दलों में कम से कम दो-दो खिलाड़ी हों।
2. टॉस करना। टॉस जीतने वाला दल खेल प्रारंभ करेगा।
3. गेंद को छोटे घेरे या वृत्त में रखना। हमला करने वाले दल के खिलाड़ी खेल प्रारंभ होते ही बॉल को पीटते हुए बचाव दल के दायरे में दूर तक ले जाना चाहते हैं।
4. दोनों दलों के एक-एक खिलाड़ी अपनी-अपनी तरफ की 'डी' में खड़े रहते हैं। वे प्रयास करते हैं कि गेंद रेखा पार न करे।
5. खिलाड़ी डाँडी या गोथा के दोनों ओर से खेल सकते हैं, जबकि ऐसी सुविधा हॉकी के खेल में नहीं है।
6. बाकी सारा खेल हॉकी के खेल के समान होता है। प्रश्न उठता है कि इस खेल में गोलपोस्ट नहीं होते यानी गोल करने का मामला नहीं बनता, तो हार-जीत का निर्णय कैसे किया जाता है? उत्तर यह है कि जो दल गेंद को अधिक से अधिक बार विरोधी के पाले में ढकेलता है, वही बलवान है और इसलिए विजयी भी।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 2.indd 22 10/06/2024 11:19:16

7. खेल के दो विशेष नियम हैं। पहला, गेंद को शरीर के किसी भी अंग से न छूना, न रोकना। दूसरा, गेंद को हवाई शॉट न मारना और न उसे हवा में शॉट खेलकर साथी खिलाड़ी को पास देना। बाकी लकड़ी से आप गेंद को रोक सकते हैं या हिट कर सकते हैं। आगे जैसा कि बता चुके हैं, जो दल बीच की रेखा को पार करके विरोधी दल के क्षेत्र में अधिक से अधिक दबाव या प्रवेश बनाए रखता है, वह विजयी होता है।
विशेष— यह खेल होली का त्योहार आने के कुछ दिन पहले से खेला जाता है। अंत में जिस दिन होलिका जलाई जाती है, उस दिन ये दुइत और गोथे (गेंद और डंडे) आग में डाल दिए जाते हैं।



साझी समझ

(क) आपने इस खेल के नियम पढ़कर अच्छी तरह समझ लिए हैं। अब अपने मित्रों के साथ मिलकर 'डाँडी' या 'गोथा' खेल खेलिए।

(ख) आप भी 'डाँडी' या 'गोथा' जैसे अनेक स्वदेशी खेल अपने मित्रों के साथ मिलकर अपने विद्यालय, घर या मोहल्ले में खेलते होंगे। अब आप ऐसे ही किसी एक खेल के नियम इस प्रकार से लिखिए कि उन्हें पढ़कर कोई भी बच्चा उस खेल को समझ सके और खेल सके।



खोजबीन के लिए

नीचे ध्यानचंद जी के विषय में कुछ सामग्री दी गई है जैसे— फिल्में, साक्षात्कार आदि, इन्हें पुस्तक में दिए गए क्यू.आर.कोड की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें।

- हॉकी के जादूगर - मेजर ध्यानचंद - प्रेरक गाथाएँ
- हॉकी के जादूगर- मेजर ध्यानचंद
- ओलंपिक
- मेजर ध्यानचंद से साक्षात्कार

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

पढ़ने के लिए

एक दौड़ ऐसी भी

कई साल पहले ओलंपिक खेलों के दौरान एक विशेष दौड़ होने जा रही थी। सौ मीटर की इस दौड़ में एक आश्चर्यजनक घटना हुई। नौ प्रतिभागी आरंभिक रेखा पर तैयार खड़े थे। उन सभी को कोई-न-कोई शारीरिक विकलांगता थी।

सीटी बजी, सभी दौड़ पड़े। बहुत तीव्र तो नहीं, पर उनमें जीतने की होड़ अवश्य तेज़ थी। सभी जीतने की उत्सुकता के साथ आगे बढ़े। सभी, बस एक छोटे से लड़के को छोड़कर। तभी छोटा लड़का ठोकर खाकर लड़खड़ाया, गिरा और रो पड़ा।

उसकी पुकार सुनकर बाकी प्रतिभागी दौड़ना छोड़ देखने लगे कि क्या हुआ? फिर, एक-एक करके वे सब उस बच्चे की सहायता के लिए उसके पास आने लगे। सब के सब लौट आए। उसे दोबारा खड़ा किया। उसके आँसू पोंछे, धूल साफ़ की। वह छोटा लड़का एक ऐसी बीमारी से ग्रस्त था, जिसमें शरीर के अंगों की बढ़त धीमी होती है और उनमें तालमेल की कमी भी रहती है।

फिर तो सारे बच्चों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और साथ मिलकर दौड़ लगाई और सब के सब अंतिम रेखा तक एक साथ पहुँच गए। दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे, इस प्रश्न के साथ कि सब के सब एक साथ यह दौड़ जीते हैं, इनमें से किसी एक को स्वर्ण पदक कैसे दिया जा सकता है? निर्णायकों ने सबको स्वर्ण पदक देकर समस्या का बढ़िया हल ढूँढ़ निकाला। उस दिन मित्रता का अनोखा दृश्य देख दर्शकों की तालियाँ थमने का नाम नहीं ले रही थीं।

NOT TO BE REPUBLISHED



Chapter 2.indd 24 10/06/2024 11:19:19

3

671CH03



पहली बूँद



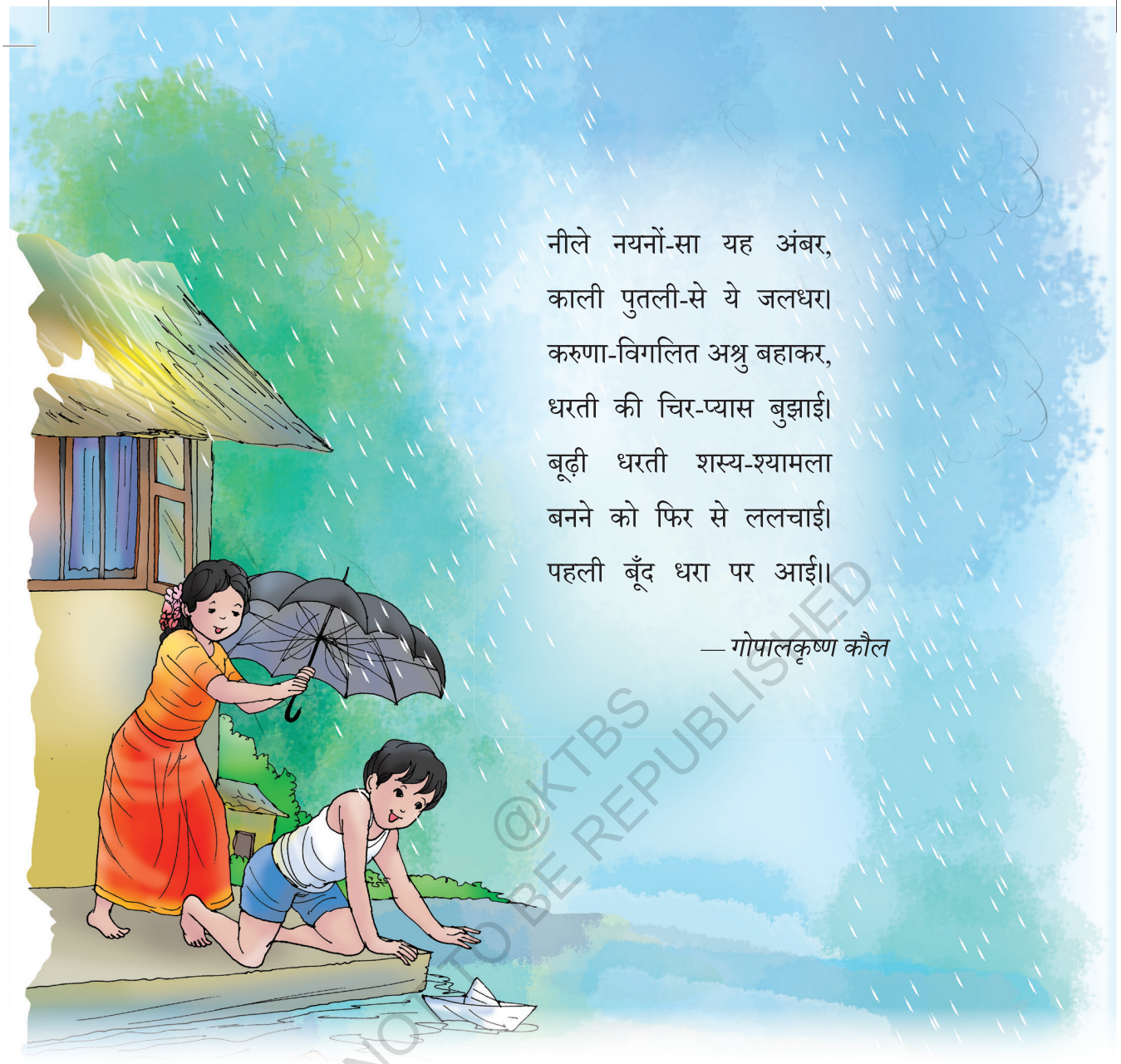
वह पावस का प्रथम दिवस जब,
पहली बूँद धरा पर आई।
अंकुर फूट पड़ा धरती से,
नव-जीवन की ले अँगड़ाई।

धरती के सूखे अधरों पर,
गिरी बूँद अमृत-सी आकर।
वसुंधरा की रोमावलि-सी,
हरी दूब पुलकी-मुसकाई।
पहली बूँद धरा पर आई।।

आसमान में उड़ता सागर,
लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर।
बजा नगाड़े जगा रहे हैं,
बादल धरती की तरुणाई।
पहली बूँद धरा पर आई।।



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



नीले नयनों-सा यह अंबर,
काली पुतली-से ये जलधर।
करुणा-विगलित अश्रु बहाकर,
धरती की चिर-प्यास बुझाई।
बूढ़ी धरती शस्य-श्यामला
बनने को फिर से ललचाई।
पहली बूँद धरा पर आई।।

— गोपालकृष्ण कौल

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

कवि से परिचय

धरती के सूखे अधरों पर 'पहली बूँद' के गिरने का अद्‌भुत दृश्य रचने वाले बाल साहित्यकार गोपालकृष्ण कौल (1923–2007) ने बच्चों के लिए देश-प्रेम, प्रकृति और जीव-जंतुओं से जुड़ी बहुत-सी मनोरम कविताएँ लिखी हैं। अपनी एक अन्य कविता 'हम कुछ सीखें' में वे कहते हैं— "देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।"

Chapter 3.indd 26 10/06/2024 11:11:07

पाठ से



मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए-

1. कविता में 'नव-जीवन की ले अँगड़ाई' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

- बादल
- अंकुर
- बूँद
- पावस

2. 'नीले नयनों-सा यह अंबर, काली पुतली- से ये जलधर' में 'काली पुतली' है—

- बारिश की बूँदें
- नगाड़ा
- वृद्ध धरती
- बादल

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर क्यों चुने?



मिलकर करें मिलान

कविता की कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन पंक्तियों में कुछ शब्द रेखांकित हैं। दाहिनी ओर रेखांकित शब्दों के भावार्थ दिए गए हैं। इनका मिलान कीजिए।

कविता की पंक्तियाँ	भावार्थ
1. आसमान में <u>उड़ता सागर,</u> लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर	1. मेघ-गर्जना
2. <u>बजा नगाड़े</u> जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई	2. बादल
3. <u>नीले नयनों सा</u> यह अम्बर, काली पुतली-से ये जलधर।	3. हरी दूब
4. वसुंधरा की <u>रोमावलि-सी,</u> हरी दूब पुलकी-मुसकाई।	4. आकाश

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार कक्षा में अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

- "आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर,
  बजा नगाड़े जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई।"
- "नीले नयनों-सा यह अंबर, काली पुतली-से ये जलधर।
  करुणा-विगलित अश्रु बहाकर, धरती की चिर-प्यास बुझाई।"



सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

- बारिश की पहली बूँद से धरती का हर्ष कैसे प्रकट होता है?
- कविता में आकाश और बादलों को किनके समान बताया गया है?



कविता की रचना

'आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर' कविता की इस पंक्ति का सामान्य अर्थ देखें तो समुद्र का आकाश में उड़ना असंभव होता है। लेकिन जब हम इस पंक्ति का भावार्थ समझते हैं तो अर्थ इस प्रकार निकलता है— समुद्र का जल बिजलियों के सुनहरे पंख लगाकर आकाश में उड़ रहा है। ऐसे प्रयोग न केवल कविता की सुंदरता बढ़ाते हैं बल्कि उसे आनंददायक भी बनाते हैं। इस कविता में ऐसे दृश्यों को पहचानें और उन पर चर्चा करें।



शब्द एक अर्थ अनेक

'अंकुर फूट पड़ा धरती से, नव-जीवन की ले अँगड़ाई' कविता की इस पंक्ति में 'फूटने' का अर्थ पौधे का अंकुरण है। 'फूट' का प्रयोग अलग-अलग अर्थों में किया जाता है, जैसे— फूट डालना, घड़ा फूटना आदि। अब फूट शब्द का प्रयोग ऐसे वाक्यों में कीजिए जहाँ इसके भिन्न-भिन्न अर्थ निकलते हों, जैसे— अंग्रेज़ों की नीति थी फूट डालो और राज करो।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 3.indd 28 10/06/2024 11:11:11



अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

'नीले नयनों-सा यह अंबर, काली पुतली-से ये जलधर' कविता की इस पंक्ति में 'जलधर' शब्द आया है। 'जलधर' दो शब्दों से बना है, जल और धर। इस प्रकार जलधर का शाब्दिक अर्थ हुआ जल को धारण करने वाला। बादल और समुद्र; दोनों ही जल धारण करते हैं। इसलिए दोनों जलधर हैं। वाक्य के संदर्भ या प्रयोग से हम जान सकेंगे कि जलधर का अर्थ समुद्र है या बादल। शब्दकोश या इंटरनेट की सहायता से 'धर' से मिलकर बने कुछ शब्द और उनके अर्थ ढूँढ़कर लिखिए।



शब्द पहेली

दिए गए शब्द-जाल में प्रश्नों के उत्तर खोजें—

न	य	न	ल
गा	दू	ब	अं
ड़ा	अ	श्रु	ब
ज	ल	ध	र

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS

क. एक प्रकार का वाद्य यंत्र ----------

ख. आँख के लिए एक अन्य शब्द ----------

ग. जल को धारण करने वाला ----------

घ. एक प्रकार की घास ----------

ङ. आँसू का समानार्थी ----------

च. आसमान का समानार्थी शब्द ----------

पाठ से आगे



आपकी बात

- बारिश को लेकर हर व्यक्ति का अनुभव भिन्न होता है। बारिश आने पर आपको कैसा लगता है? बताइए।
- आपको कौन-सी ऋतु सबसे अधिक प्रिय है और क्यों? बताइए।



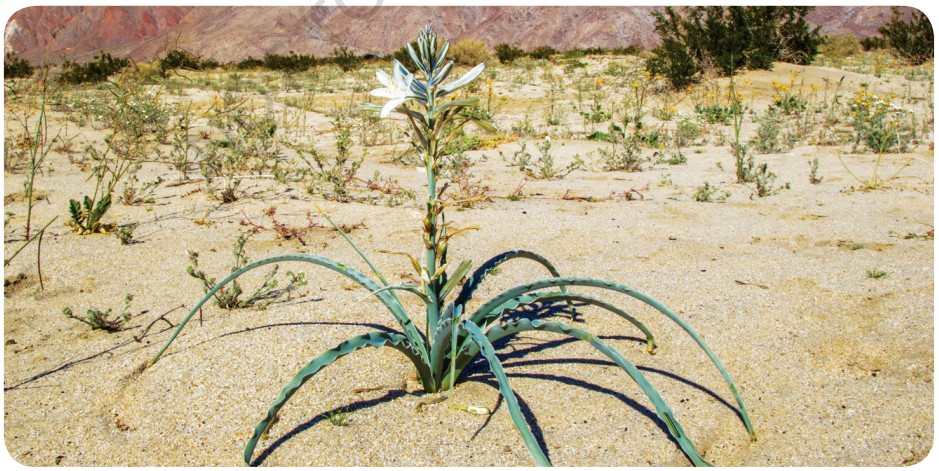
समाचार माध्यमों से

प्रत्येक मौसम समाचार के विभिन्न माध्यमों (इलेक्ट्रॉनिक या प्रिंट या सोशल मीडिया) के प्रमुख समाचारों में रहता है। संवाददाता कभी बाढ़ तो कभी सूखे या भीषण ठंड के समाचार देते दिखाई देते हैं। आप भी बन सकते हैं संवाददाता या लिख सकते हैं समाचार।

- अत्यधिक गर्मी, सर्दी या बारिश में आपने जो स्थिति देखी है उसका आँखों देखा हाल अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।



सृजन



नाम देना भी सृजन है। ऊपर दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और इसे एक नाम दीजिए।

@NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 3.indd 30 10/06/2024 11:11:14



इन्हें भी जानें



इस कविता में नगाड़े की ध्वनि का उल्लेख है— "बजा नगाड़े जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई।" नगाड़ा भारत का एक पारंपरिक वाद्ययंत्र है। कुछ वाद्ययंत्रों को उन पर चोट कर बजाया जाता है, जैसे— ढोलक, नगाड़ा, डमरू, डफली आदि। नगाड़ा प्राय: लोक उत्सवों के अवसर पर बजाया जाता है। होली जैसे लोकपर्व के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में इसका प्रयोग होता है। नगाड़ों को जोड़े में भी बजाया जाता है जिसमें एक की ध्वनि पतली तथा दूसरे की मोटी होती है।



खोजबीन

आपके यहाँ उत्सवों में कौन-से वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं? उनके बारे में जानकारी एकत्र करें और अपने समूह में उस पर चर्चा करें।



आइए इंद्रधनुष बनाएँ

बारिश की बूँदें न केवल जीव-जंतुओं को राहत पहुँचाती हैं बल्कि धरती को हरा-भरा भी बनाती हैं। कभी-कभी ये बूँदें आकाश में बहुरंगी छटा बिखेरती हैं जिसे 'इंद्रधनुष' कहा जाता है। आप भी एक सुंदर इंद्रधनुष बनाइए और उस पर एक छोटी-सी कविता लिखिए। इसे कोई प्यारा सा नाम भी दीजिए।

© KTRS NOT TO BE REPUBLISHED



झरोखे से

एक बूँद

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी
सोचने फिर-फिर यही मन में लगी
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों बढ़ी।

— *अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 3.indd 32 10/06/2024 11:11:16

4

671CH04



हार की जीत

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवत भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे सुलतान कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, ज़मीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुलतान के बिना नहीं रह सकूँगा", उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, "ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।" जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।



© KSEEB BE REPUBLISHED

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। एक दिन वह दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, "खड्गसिंह, क्या हाल है?"

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुलतान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी!"

"कहते हैं देखने में भी बहुत सुंदर है।"

"क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड्गसिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था। सोचने लगा, 'भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ?' कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?"

बाबा भारती भी मनुष्य ही थे। अपनी चीज़ की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाए और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचककर सवार हो गए, घोड़ा हवा से बातें करने लगा। उसकी चाल को देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था,

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 4.indd 34 10/06/2024 11:13:06

आदमी थे और बेरहमी थी। जाते-जाते उसने कहा, "बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई, "ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।"



@KTBS TO BE REPUBLISHED

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, "क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड्गसिंह था। बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, "ज़रा ठहर जाओ।"

खड्गसिंह ने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।"

"परंतु एक बात सुनते जाओ।"

खड्गसिंह ठहर गया।

बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, "यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ, इसे अस्वीकार न करना; नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"

"बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसे लगा था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 4.indd 36 10/06/2024 11:13:09



सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी, इसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे। दुनिया से विश्वास उठ जाएगा।" यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न रहा हो।

बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, 'कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, "इसके बिना मैं रह न सकूँगा।" इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह खयाल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें।'

Chapter 4.indd 37 10/06/2024 11:13:12

रात के अँधेरे में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में पश्चाताप के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात, इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँव को मन-मन-भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते। और कहते थे, "अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

थोड़ी देर के बाद जब वह अस्तबल से बाहर निकले तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। ये आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्गसिंह खड़ा होकर रोया था। दोनों के आँसुओं का उस भूमि की मिट्टी पर परस्पर मेल हो गया।

— *सुदर्शन*

© CBSE NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 4.indd 38 10/06/2024 11:13:12

लेखक से परिचय



(1896–1983)

यह कहानी हिंदी की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है और इसे हिंदी के प्रसिद्ध लेखक सुदर्शन ने लिखा है। सुदर्शन का वास्तविक नाम बदरीनाथ भट्ट था। उन्होंने पहली कहानी तब लिखी थी जब ये आप ही की तरह छठी कक्षा में पढ़ते थे। सुदर्शन ने कहानियों के अतिरिक्त कविताएँ, लेख, नाटक और उपन्यास भी लिखे। इसके अलावा उन्होंने अनेकों फ़िल्मों की पटकथा और गीत भी लिखे।

पाठ से

मेरी समझ से

आइए, अब हम 'हार की जीत' कहानी को थोड़ा और निकटता से समझ लेते हैं।

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) सुलतान के छीने जाने का बाबा भारती पर क्या प्रभाव हुआ?

- बाबा भारती के मन से चोरी का डर समाप्त हो गया।
- बाबा भारती ने गरीबों की सहायता करना बंद कर दिया।
- बाबा भारती ने द्वार बंद करना छोड़ दिया।
- बाबा भारती असावधान हो गए।

(2) "बाबा भारती भी मनुष्य ही थे।" इस कथन के समर्थन में लेखक ने कौन-सा तर्क दिया है?

- बाबा भारती ने डाकू को घमंड से घोड़ा दिखाया।
- बाबा भारती घोड़े की प्रशंसा दूसरों से सुनने के लिए व्याकुल थे।
- बाबा भारती को घोड़े से अत्यधिक लगाव और मोह था।
- बाबा भारती हर पल घोड़े की रखवाली करते रहते थे।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS

Chapter 4.indd 39 10/06/2024 11:13:13



शीर्षक

(क) आपने अभी जो कहानी पढ़ी है, इसका नाम सुदर्शन ने 'हार की जीत' रखा है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि उन्होंने इस कहानी को यह नाम क्यों दिया होगा? अपने उत्तर का कारण भी लिखिए।

(ख) यदि आपको इस कहानी को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा, यह भी बताइए।

(ग) बाबा भारती ने डाकू खड्गसिंह से कौन-सा वचन लिया?



पंक्तियों पर चर्चा

कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार लिखिए—

- "भगवत-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता।"
- "बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से।"
- "वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर अपना अधिकार समझता था।"
- "बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है।"
- "उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई।"



सोच-विचार के लिए

कहानी को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित पंक्ति के विषय में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

"दोनों के आँसुओं का उस भूमि की मिट्टी पर परस्पर मेल हो गया।"

(क) किस-किस के आँसुओं का मेल हो गया था?

(ख) दोनों के आँसुओं में क्या अंतर था?

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 4.indd 40 10/06/2024 11:13:14



दिनचर्या

(क) कहानी पढ़कर आप बाबा भारती के जीवन के विषय में बहुत कुछ जान चुके हैं। अब आप कहानी के आधार पर बाबा भारती की दिनचर्या लिखिए। वे सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक क्या-क्या करते होंगे, लिखिए। इस काम में आप थोड़ा-बहुत अपनी कल्पना का सहारा भी ले सकते हैं।

(ख) अब आप अपनी दिनचर्या भी लिखिए।



कहानी की रचना

(क) इस कहानी की कौन-कौन सी बातें आपको पसंद आईं? आपस में चर्चा कीजिए।

(ख) कोई भी कहानी पाठक को तभी पसंद आती है जब उसे अच्छी तरह लिखा गया हो। लेखक कहानी को अच्छी तरह लिखने के लिए अनेक बातों का ध्यान रखते हैं, जैसे— शब्द, वाक्य, संवाद आदि। इस कहानी में आए संवादों के विषय में अपने विचार लिखें।



मुहावरे कहानी से

(क) कहानी से चुनकर कुछ मुहावरे नीचे दिए गए हैं— लट्टू होना, हृदय पर साँप लोटना, फूले न समाना, मुँह मोड़ लेना, मुख खिल जाना, न्योछावर कर देना। कहानी में इन्हें खोजकर इनका प्रयोग समझिए।

(ख) अब इनका प्रयोग करते हुए अपने मन से नए वाक्य बनाइए।

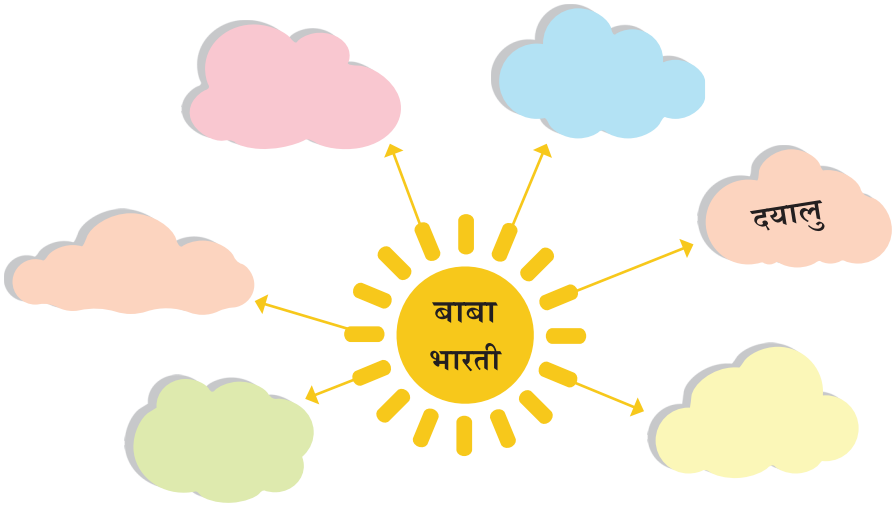


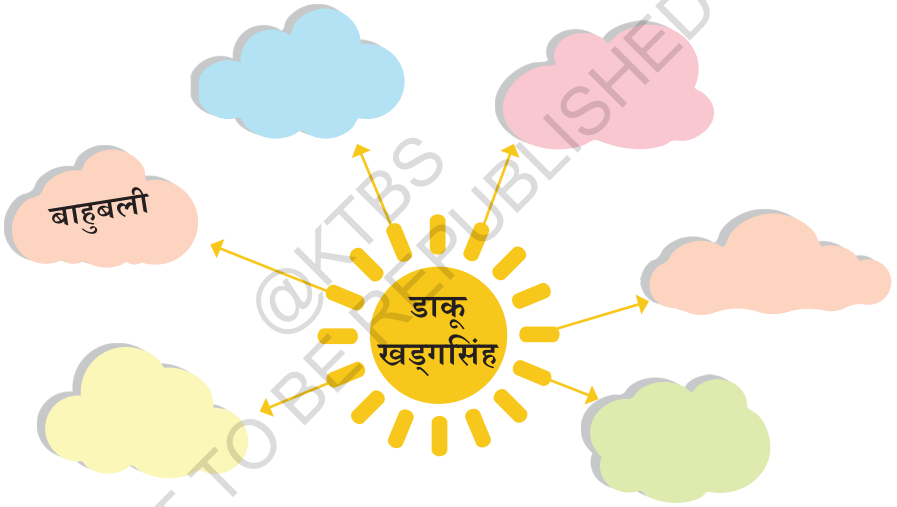
कैसे-कैसे पात्र

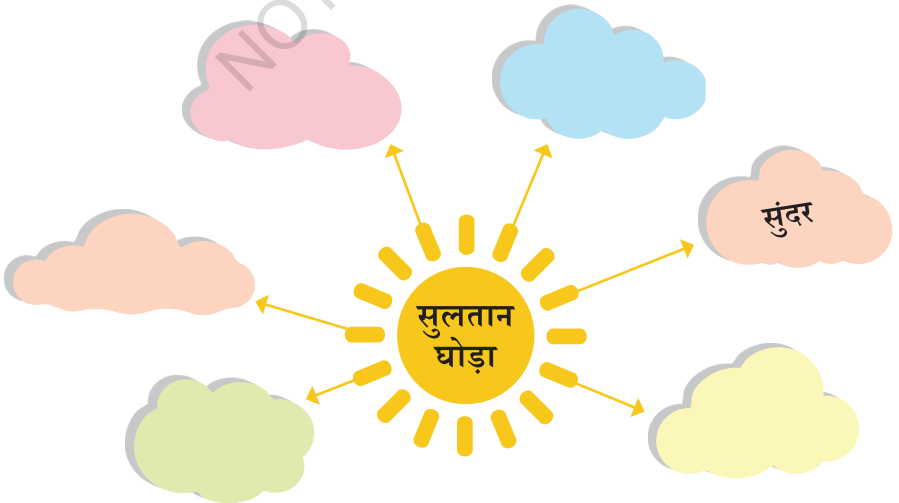
इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं— बाबा भारती, डाकू खड्गसिंह और सुलतान घोड़ा। इनके गुणों को बताने वाले शब्दों से दिए गए शब्द-चित्रों को पूरा कीजिए—

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 4.indd 41 10/06/2024 11:13:15







@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



आपने जो शब्द लिखे हैं, वे किसी की विशेषता, गुण और प्रकृति के बारे में बताने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं। ऐसे शब्दों को विशेषण कहते हैं।

पाठ से आगे



सुलतान की कहानी

मान लीजिए, यह कहानी सुलतान सुना रहा है। तब कहानी कैसे आगे बढ़ती? स्वयं को सुलतान के स्थान पर रखकर कहानी बनाइए।

(संकेत— आप कहानी को इस प्रकार बढ़ा सकते हैं — *मेरा नाम सुलतान है। मैं एक घोड़ा हूँ.....*)



मन के भाव

(क) कहानी में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। बताइए, कहानी में कौन, कब, ऐसा अनुभव कर रहा था—

- चकित
- अधीर
- डर
- प्रसन्नता
- करुणा
- निराशा

(ख) आप उपर्युक्त भावों को कब-कब अनुभव करते हैं? लिखिए।

(संकेत— जैसे गली में किसी कुत्ते को देखकर डर या प्रसन्नता या करुणा आदि का अनुभव करना)

@KVBS NOT TO BE REPUBLISHED



Chapter 4.indd 43 10/06/2024 11:13:16



झरोखे से

आप जानते ही हैं कि लेखक सुदर्शन ने अनेक कविताएँ भी लिखी हैं। आइए, उनकी लिखी एक कविता पढ़ते हैं—

वह चली हवा

वह चली हवा,
वह चली हवा।
ना तू देखे
ना मैं देखूँ

पर पत्तों ने तो देख लिया
वरना वे खुशी मनाते क्यों?
वह चली हवा,
वह चली हवा।

— सुदर्शन



साझी समझ

आपको इस कविता में क्या अच्छा लगा? आपस में चर्चा कीजिए और अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



खोजबीन के लिए

सुदर्शन की कुछ अन्य रचनाएँ पुस्तक में दिए गए क्यू.आर. कोड या इंटरनेट या पुस्तकालय की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें।

Chapter 4.indd 44 10/06/2024 11:13:18

5

671CH05



रहीम के दोहे*

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि॥

तरुवर फल नहिं खात हैं सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥

रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय॥

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल॥

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत॥

— *अब्दुर्रहीम खानखाना*

*संदर्भ— *रहीम ग्रंथावली* (सं.) विद्यानिवास मिश्र

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

कवि से परिचय



रहीम भक्तिकाल के एक प्रसिद्ध कवि थे। ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म 16वीं शताब्दी में हुआ था। उन्होंने नीति, भक्ति और प्रेम संबंधी रचनाएँ कीं। उन्होंने अवधी और ब्रजभाषा दोनों में कविताएँ लिखी हैं। रहीम रामायण, महाभारत आदि प्रसिद्ध ग्रंथों के अच्छे जानकार थे। उनकी मृत्यु 17वीं शताब्दी में हुई थी। आज भी आम जन-जीवन में उनके दोहे बहुत लोकप्रिय हैं।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे सही (सटीक) उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) "रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल। आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।" दोहे का भाव है—

- सोच-समझकर बोलना चाहिए।
- मधुर वाणी में बोलना चाहिए।
- धीरे -धीरे बोलना चाहिए।
- सदा सच बोलना चाहिए।

(2) "रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि। जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।" इस दोहे का भाव क्या है?

- तलवार सुई से बड़ी होती है।
- सुई का काम तलवार नहीं कर सकती।
- तलवार का महत्व सुई से ज्यादा है।
- हर छोटी-बड़ी चीज़ का अपना महत्व होता है।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने यही उत्तर क्यों चुने?

NOT TO BE REPUBLISHED © CTBS

Chapter 5.indd 46 10/06/2024 11:13:57



मिलकर करें मिलान

पाठ में से कुछ दोहे स्तंभ 1 में दिए गए हैं और उनके भाव स्तंभ 2 में दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और रेखा खींचकर सही भाव से मिलान कीजिए।

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।	1. सज्जन परहित के लिए ही संपत्ति संचित करते हैं।
2. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत। बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।	2. सच्चे मित्र विपत्ति या विपदा में भी साथ रहते हैं
3. तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान। कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।	3. प्रेम या रिश्तों को सहेजकर रखना चाहिए।



पंक्तियों पर चर्चा

नीच दिए गए दोहों पर समूह में चर्चा कीजिए और उनके अर्थ या भावार्थ अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

(क) "रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।"

(ख) "रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।।"



सोच-विचार के लिए

दोहों को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

1. "रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।"

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 5.indd 47 10/06/2024 11:13:57

(क) इस दोहे में 'मिले' के स्थान पर 'जुड़े' और 'छिटकाय' के स्थान पर 'चटकाय' शब्द का प्रयोग भी लोक में प्रचलित है। जैसे—

"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।।"

इसी प्रकार पहले दोहे में 'डारि' के स्थान पर 'डार', 'तलवारि' के स्थान पर 'तरवार' और चौथे दोहे में 'मानुष' के स्थान पर 'मानस' का उपयोग भी प्रचलित हैं। ऐसा क्यों होता है?

(ख) इस दोहे में प्रेम के उदाहरण में धागे का प्रयोग ही क्यों किया गया है? क्या आप धागे के स्थान पर कोई अन्य उदाहरण सुझा सकते हैं? अपने सुझाव का कारण भी बताइए।

2. "तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।"

इस दोहे में प्रकृति के माध्यम से मनुष्य के किस मानवीय गुण की बात की गई है? प्रकृति से हम और क्या-क्या सीख सकते हैं?



शब्दों की बात

हमने शब्दों के नए-नए रूप जाने और समझे। अब कुछ करके देखें—

- **शब्द-संपदा**

कविता में आए कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन शब्दों को आपकी मातृभाषा में क्या कहते हैं? लिखिए।

कविता में आए शब्द	मातृभाषा में समानार्थक शब्द
तरुवर	
बिपति	
छिटकाय	
सुजान	
सरवर	
साँचे	
कपाल	

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 5.indd 48 10/06/2024 11:13:58

- **शब्द एक अर्थ अनेक**

"रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।"

इस दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं— सम्मान, जल, चमक।

इसी प्रकार कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। आप भी इन शब्दों के तीन-तीन अर्थ लिखिए। आप इस कार्य में शब्दकोश, इंटरनेट, शिक्षक या अभिभावकों की सहायता भी ले सकते हैं।

कल – ----------, ----------, ----------

पत्र – ----------, ----------, ----------

कर – ----------, ----------, ----------

फल – ----------, ----------, ----------

पाठ से आगे



आपकी बात

"रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।।"

इस दोहे का भाव है— न कोई बड़ा है और न ही कोई छोटा है। सबके अपने-अपने काम हैं, सबकी अपनी-अपनी उपयोगिता और महत्ता है। चाहे हाथी हो या चींटी, तलवार हो या सुई, सबके अपने-अपने आकार-प्रकार हैं और सबकी अपनी-अपनी उपयोगिता और महत्व है। सिलाई का काम सुई से ही किया जा सकता है, तलवार से नहीं। सुई जोड़ने का काम करती है जबकि तलवार काटने का। कोई वस्तु हो या व्यक्ति, छोटा हो या बड़ा, सबका सम्मान करना चाहिए।

अपने मनपसंद दोहे को इस तरह की शैली में अपने शब्दों में लिखिए। दोहा पाठ से या पाठ से बाहर का हो सकता है।

© TBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 5.indd 49 10/06/2024 11:13:58



सरगम

- रहीम, कबीर, तुलसी, वृंद आदि के दोहे आपने दृश्य-श्रव्य (टी.वी.-रेडियो) माध्यमों से कई बार सुने होंगे। कक्षा में आपने दोहे भी बड़े मनोयोग से गाए होंगे। अब बारी है इन दोहों की रिकॉर्डिंग (ऑडियो या विजुअल) की। रिकॉर्डिंग सामान्य मोबाइल से की जा सकती है। इन्हें अपने दोस्तों के साथ समूह में या अकेले गा सकते हैं। यदि संभव हो तो वाद्ययंत्रों के साथ भी गायन करें। रिकॉर्डिंग के बाद दोहे स्वयं भी सुनें और लोगों को भी सुनाएँ।
- रहीम, वृन्द, कबीर, तुलसी, बिहारी आदि के दोहे आज भी जनजीवन में लोकप्रिय हैं। दोहे का प्रयोग लोग अपनी बात पर विशेष ध्यान दिलाने के लिए करते हैं। जब दोहे समाज में इतने लोकप्रिय हैं तो क्यों न इन दोहों को एकत्र करें और अंत्याक्षरी खेलें। अपने समूह में मिलकर दोहे एकत्र कीजिए। इस कार्य में आप इंटरनेट, पुस्तकालय और अपने शिक्षकों या अभिभावकों की सहायता भी ले सकते हैं।



आज की पहेली

1. दो अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ खाने के काम
   उल्टा होकर नाच दिखाऊँ, मैं क्यों अपना नाम बताऊँ।
2. एक किले के दो ही द्वार, उनमें सैनिक लकड़ीदार
   टकराएँ जब दीवारों से, जल उठे सारा संसार।



खोजबीन के लिए

रहीम के कुछ अन्य दोहे पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 5.indd 50 27/08/2024 10:28:29

6

671CH06



मेरी माँ

"श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' बड़े होनहार नौजवान थे। गज़ब के शायर थे। देखने में भी बहुत सुंदर थे। योग्य बहुत थे। जानने वाले कहते हैं कि यदि किसी और जगह या किसी और देश या किसी और समय पैदा हुए होते तो सेनाध्यक्ष बनते।" यह कहना है हमारे देश के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह का बिस्मिल के बारे में।

रामप्रसाद 'बिस्मिल' का जन्म जब हुआ, उस समय भारत पर अंग्रेज़ों का आधिपत्य था। 'बिस्मिल' छोटी-सी आयु से ही भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेज़ों से लड़ते रहे। अंग्रेज़ों ने उन्हें जेल भेज दिया और फ़ाँसी की सज़ा दे दी। जेल में भी उन्होंने अंग्रेज़ों के अनेक अत्याचार सहे। जेल में रहते-रहते ही उन्होंने चोरी-छिपे अपनी आत्मकथा लिखी और अंग्रेज़ों से बचते-बचाते जेल से बाहर भेजते रहे। उनके साथियों ने उसे प्रकाशित भी करवा दिया। इसका नाम रखा गया- 'निज जीवन की एक छटा।' इस पुस्तक ने अंग्रेज़ों के होश उड़ा दिए। लोगों में अंग्रेज़ों के विरुद्ध क्रोध और बढ़ गया। इस तरह इस आत्मकथा के कारण अंग्रेज़ बिस्मिल को फ़ाँसी देने के बाद भी उन्हें हरा न सके।

इस आत्मकथा के माध्यम से आज भी 'बिस्मिल' हमारे मस्तिष्क में जीवित हैं। आज भी यह आत्मकथा लोगों को प्रेरित करती है। क्या आप भी उनकी आत्मकथा को पढ़ना चाहते हैं? क्या कहा? हाँ? तो यहाँ प्रस्तुत है उसी आत्मकथा का एक अंश।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

लखनऊ कांग्रेस में जाने के लिए मेरी बड़ी इच्छा थी। दादीजी और पिताजी तो विरोध करते रहे, किंतु माताजी ने मुझे खर्च दे ही दिया। उसी समय शाहजहाँपुर में सेवा-समिति का आरंभ हुआ था। मैं बड़े उत्साह के साथ सेवा समिति में सहयोग देता था। पिताजी और दादीजी को मेरे इस प्रकार के कार्य अच्छे न लगते थे, किंतु

माताजी मेरा उत्साह भंग न होने देती थीं, जिसके कारण उन्हें अक्सर पिताजी की डाँट-फटकार तथा दंड सहन करना पड़ता था। वास्तव में, मेरी माताजी देवी हैं। मुझमें जो कुछ जीवन तथा साहस आया, वह मेरी माताजी तथा गुरुदेव श्री सोमदेव जी की कृपाओं का ही परिणाम है। दादीजी और पिताजी मेरे विवाह के लिए बहुत अनुरोध करते, किंतु माताजी यही कहतीं कि शिक्षा पा चुकने के बाद ही विवाह करना उचित होगा। माताजी के प्रोत्साहन तथा सद्व्यवहार ने मेरे जीवन में वह दृढ़ता उत्पन्न की कि किसी आपत्ति तथा संकट के आने पर भी मैंने अपने संकल्प को न त्यागा।

एक समय मेरे पिताजी दीवानी मुकदमे में किसी पर दावा करके वकील से कह गए थे कि जो काम हो वह मुझसे करा लें। कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने मुझे बुला भेजा और कहा कि मैं पिताजी के हस्ताक्षर वकालतनामे पर कर दूँ। मैंने तुरंत उत्तर दिया कि यह तो धर्म विरुद्ध होगा, इस प्रकार का पाप मैं कदापि नहीं कर सकता। वकील साहब ने बहुत समझाया कि मुकदमा खारिज हो जाएगा। किंतु मुझ पर कुछ भी प्रभाव न हुआ, न मैंने हस्ताक्षर किए। अपने जीवन में हमेशा सत्य का आचरण करता था, चाहे कुछ हो जाए, सत्य बात कह देता था।

ग्यारह वर्ष की उम्र में माताजी विवाह कर शाहजहाँपुर आई थीं। उस समय वह नितांत अशिक्षित एक ग्रामीण कन्या के समान थीं। शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद दादीजी ने अपनी छोटी बहन को बुला लिया। उन्होंने माताजी को गृहकार्य की



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 6.indd 52 10/06/2024 11:19:47

शिक्षा दी। थोड़े दिनों में माताजी ने घर के सब काम-काज को समझ लिया और भोजनादि का ठीक-ठीक प्रबंध करने लगीं। मेरे जन्म होने के पाँच या सात वर्ष बाद उन्होंने हिंदी पढ़ना आरंभ किया। पढ़ने का शौक उन्हें खुद ही पैदा हुआ था। मुहल्ले की सखी-सहेली जो घर पर आया करती थीं, उन्हीं में जो शिक्षित थीं, माताजी उनसे अक्षर-बोध करतीं। इस प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता, उसमें पढ़ना-लिखना करती। परिश्रम के फल से थोड़े दिनों में ही वह देवनागरी पुस्तकों का अध्ययन करने लगीं। मेरी बहनों को छोटी आयु में माताजी ही शिक्षा दिया करती थीं। जब से मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया, माताजी से खूब वार्तालाप होता। उस समय की अपेक्षा अब उनके विचार भी कुछ उदार हो गए हैं। यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं तो मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार-चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता। शिक्षादि के अतिरिक्त क्रांतिकारी जीवन में भी उन्होंने मेरी वैसी ही सहायता की है, जैसी मेजिनी को उनकी माता ने की थी। माताजी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राणहानि न हो। उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना। उनके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मजबूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी थी।

जन्मदात्री जननी! इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण उतारने का प्रयत्न करने का भी अवसर न मिला। इस जन्म में तो क्या यदि मैं अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो भी तुमसे उऋण नहीं हो सकता। जिस प्रेम तथा दृढ़ता के साथ तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया है, वह अवर्णनीय है। मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने जिस प्रकार अपनी देववाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया है।



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 6.indd 53 10/06/2024 11:19:48

तुम्हारी दया से ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका। धार्मिक जीवन में भी तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता दी। जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की उसका भी श्रेय तुम्हीं को है। जिस मनोहर रूप से तुम मुझे उपदेश करती थीं, उसका स्मरण कर तुम्हारी मंगलमयी मूर्ति का ध्यान आ जाता है और मस्तक झुक जाता है। तुम्हें यदि मुझे ताड़ना भी देनी हुई, तो बड़े स्नेह से हर बात को समझा दिया। यदि मैंने धृष्टतापूर्ण उत्तर दिया तब तुमने प्रेम भरे शब्दों में यही कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे, वह करो, किंतु ऐसा करना ठीक नहीं, इसका परिणाम अच्छा न होगा। जीवनदात्री! तुमने इस शरीर को जन्म देकर केवल पालन-पोषण ही नहीं किया बल्कि आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं। जन्म-जन्मांतर परमात्मा ऐसी ही माता दें।

महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर नहीं होने दिया। सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी को सुनाते हुए मुझे सांत्वना देती रहीं। तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन भर में कोई कष्ट अनुभव न किया। इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक इच्छा है, वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता। किंतु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती और तुम्हें मेरी मृत्यु की दुखभरी खबर सुनाई जाएगी। माँ! मुझे विश्वास है कि तुम यह समझ कर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता या भारत माता की सेवा में अपने जीवन को बलि-देवी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारी कोख कलंकित न की, अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा। जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जाएगा तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जाएगा। गुरु गोबिंद सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु की खबर सुनी तो बहुत प्रसन्न हुई थीं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई बाँटी थी। जन्मदात्री! वर दो कि अंतिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करूँ।

— रामप्रसाद 'बिस्मिल'

NOT TO BE REPUBLISHED © NCERT

Chapter 6.indd 54 10/06/2024 11:19:48

लेखक से परिचय



(1897–1927)

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक क्रांतिकारी वीरों ने अपना बलिदान दिया। 'सरफरोशी की तमन्ना' जैसा तराना लिखने वाले रामप्रसाद 'बिस्मिल' भी उन्हीं क्रांतिकारियों में से एक थे। मात्र तीस वर्ष की आयु में अंग्रेज़ सरकार द्वारा उन्हें फ़ाँसी पर लटका दिया गया। असाधारण प्रतिभा के धनी रामप्रसाद 'बिस्मिल' एक अच्छे कवि और लेखक भी थे। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें उनकी आत्मकथा काफ़ी चर्चित रही। 'मेरी माँ' उनकी आत्मकथा का ही एक अंश है।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) 'किंतु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती।'

बिस्मिल को अपनी किस इच्छा के पूर्ण न होने की आशंका थी?

- भारत माता के साथ रहने की
- अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने की
- अपनी माँ की जीवनपर्यंत सेवा करने की
- भोग विलास तथा ऐश्वर्य भोगने की

(2) रामप्रसाद बिस्मिल की माँ का सबसे बड़ा आदेश क्या था?

- देश की सेवा करें
- कभी किसी के प्राण न लेना
- कभी किसी से छल न करना
- सदा सच बोलना

(ख) अब अपने मित्रों के साथ तर्कपूर्ण चर्चा कीजिए कि आपने ये ही उत्तर क्यों चुने?

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 6.indd 55 10/06/2024 11:19:49



पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें पढ़कर समझिए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? कक्षा में अपने विचार साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं, तो मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार-चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता।"

(ख) "उनके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मज़बूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा भंग भी करनी पड़ी थी।"



मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थ या संदर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट, पुस्तकालय या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. देवनागरी	1. सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे। उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की।
2. आर्यसमाज	2. इटली के गुप्त राष्ट्रवादी दल का सेनापति; इटली का मसीहा था जिसने लोगों को एक सूत्र में बाँधा।
3. मेजिनी	3. महर्षि दयानंद द्वारा स्थापित एक संस्था।
4. गोबिंद सिंह	4. भारत की एक भाषा-लिपि जिसमें हिंदी, संस्कृत, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।



सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

Chapter 6.indd 56 10/06/2024 11:19:50

1. बिस्मिल की माता जी जब ब्याह कर आईं तो उनकी आयु काफ़ी कम थी।

   (क) फिर भी उन्होंने स्वयं को अपने परिवार के अनुकूल कैसे ढाला?

   (ख) उन्होंने अपनी इच्छाशक्ति के बल पर स्वयं को कैसे शिक्षित किया?

2. बिस्मिल को साहसी बनाने में उनकी माता जी ने कैसे सहयोग दिया?

3. आज से कई दशक पहले बिस्मिल की माँ शिक्षा के महत्व को समझती थीं, बताइए कैसे?

4. हम कैसे कह सकते हैं कि बिस्मिल की माँ स्वतंत्र और उदार विचारों वाली थीं?



आत्मकथा की रचना

यह पाठ रामप्रसाद 'बिस्मिल' की आत्मकथा का एक अंश है। आत्मकथा यानी अपनी कथा। दुनिया में अनेक लोग अपनी आत्मकथा लिखते हैं, कभी अपने लिए, तो कभी दूसरों के पढ़ने के लिए।

(क) इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और अपने-अपने समूह में मिलकर इस पाठ की ऐसी पंक्तियों की सूची बनाइए जिनसे पता लगे कि लेखक अपने बारे में कह रहा है।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED



शब्द-प्रयोग तरह-तरह के

(क) "माता जी उनसे अक्षर-बोध करतीं।" इस वाक्य में अक्षर-बोध का अर्थ है— अक्षर का बोध या ज्ञान।

एक अन्य वाक्य देखिए— "जो कुछ समय मिल जाता, उसमें पढ़ना-लिखना करतीं।" इस वाक्य में पढ़ना-लिखना अर्थात पढ़ना और लिखना।

हम लेखन में शब्दों को मिलाकर छोटा बना लेते हैं जिससे समय, स्याही, कागज़ आदि की बचत होती है। संक्षेपीकरण मानव का स्वभाव भी हैं। इस पाठ से ऐसे शब्द खोजकर सूची बनाइए।

Chapter 6.indd 57 10/06/2024 11:19:50

पाठ से आगे



आपकी बात

(क) रामप्रसाद 'बिस्मिल' के मित्रों के नाम खोजिए और स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भागीदारी पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

(ख) नीचे लिखे बिंदुओं को आधार बनाते हुए अपनी माँ या अपने अभिभावक से बातचीत कीजिए और उनके बारे में गहराई से जानिए कि उनका प्रिय रंग, भोज्य पदार्थ, गीत, बचपन की यादें, प्रिय स्थान आदि कौन-कौन से थे?

उदाहरण के लिए—

- आपका जन्म कहाँ हुआ था?
- आपकी प्रिय पुस्तक का नाम क्या है?



पुस्तकालय या इंटरनेट से

आप पुस्तकालय से रामप्रसाद 'बिस्मिल' की आत्मकथा खोजकर पढ़िए।

देशभक्तों से संबंधित अन्य पुस्तकें, जैसे— उनके पत्र, आत्मकथा, जीवनी आदि पढ़िए और अपने मित्रों से साझा कीजिए।



शब्दों की बात

आप अपनी माँ को क्या कहकर संबोधित करते हैं? अन्य भाषाओं में माँ के लिए प्रयुक्त संबोधन और माँ के लिए शब्द ढूँढ़िए।

क्या उनमें कुछ समानता दिखती है? हाँ, तो क्या?



आज की पहेली

यहाँ दी गई वर्ग पहेली में पाठ से बारह विशेषण दिए गए हैं। उन्हें छाँटकर पाठ में रेखांकित कीजिए।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 6.indd 58 10/06/2024 11:19:51

मं	ग	ल	म	यी	ल
प्र	त्ये	क	नो	छो	टी
धा	ग्या	र	ह	खू	ब
र्मि	सा	धा	र	ण	ड़ा
क	दु	ख	भ	री	प
म	हा	न	स्वा	धी	न



झरोखे से



ऐ मातृभूमि!

ऐ मातृभूमि! तेरी जय हो, सदा विजय हो।
प्रत्येक भक्त तेरा, सुख-शांति-कांतिमय हो।
अज्ञान की निशा में, दुख से भरी दिशा में;
संसार के हृदय में, तेरी प्रभा उदय हो।
तेरा प्रकोप सारे जग का महाप्रलय हो।
तेरी प्रसन्नता ही आनंद का विषय हो।
वह भक्ति दे कि 'बिस्मिल' सुख में तुझे न भूले,
वह शक्ति दे कि दुख में कायर न यह हृदय हो।

— *रामप्रसाद 'बिस्मिल'*



खोजबीन के लिए

माँ से संबंधित पाँच रचनाएँ पुस्तकालय से खोजें और अपनी पत्रिका बनाएँ।

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

7

671CH07



जलाते चलो

जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर
कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा।

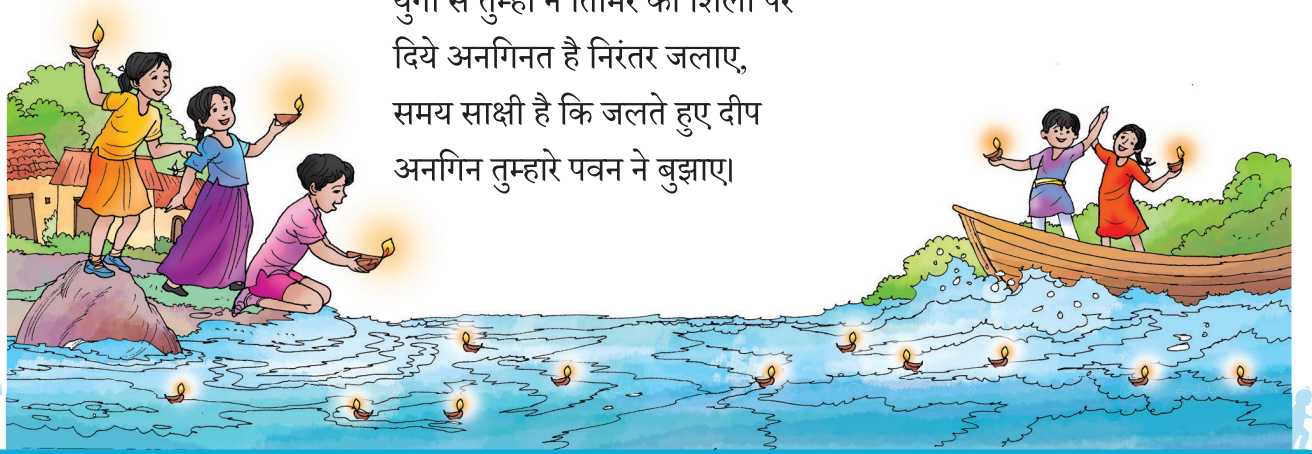
भले शक्ति विज्ञान में है निहित वह
कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी,
मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में
घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।

बिना स्नेह विद्युत-दिये जल रहे जो
बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।।

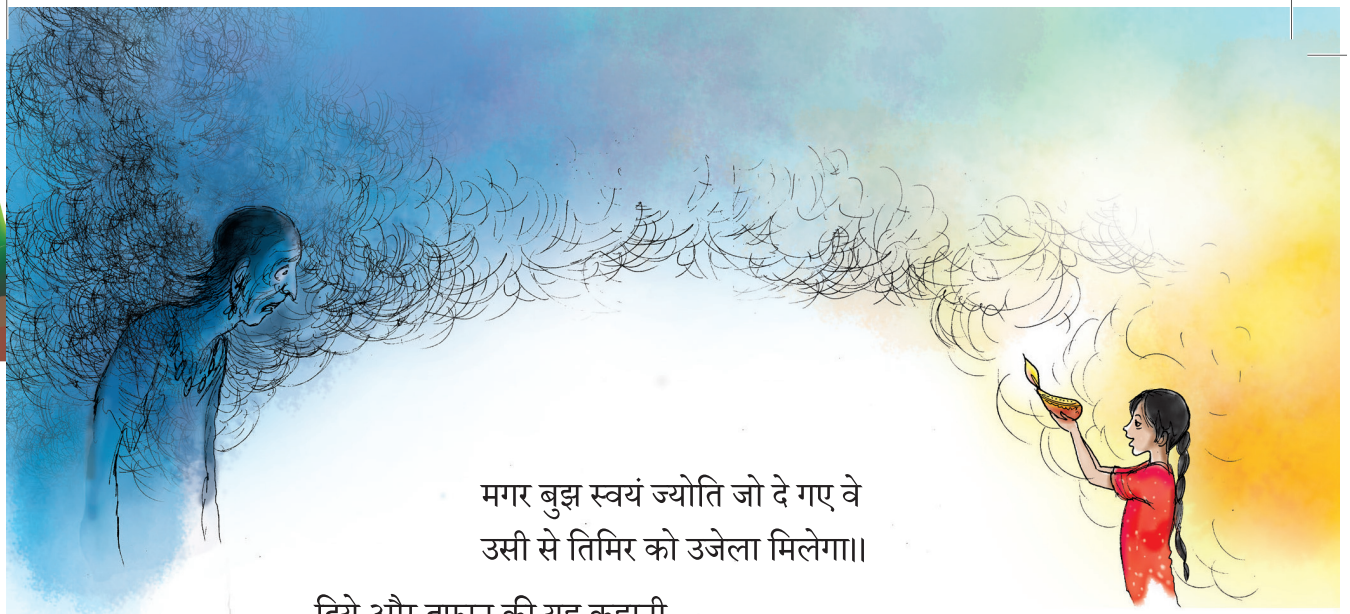
जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की
चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी,
तिमिर की सरित पार करने तुम्हीं ने
बना दीप की नाव तैयार की थी।

बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर
कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा।।

युगों से तुम्हीं ने तिमिर की शिला पर
दिये अनगिनत है निरंतर जलाए,
समय साक्षी है कि जलते हुए दीप
अनगिन तुम्हारे पवन ने बुझाए।



© KVS NOT TO BE REPUBLISHED



मगर बुझ स्वयं ज्योति जो दे गए वे
उसी से तिमिर को उजेला मिलेगा।।

दिये और तूफ़ान की यह कहानी
चली आ रही और चलती रहेगी,
जली जो प्रथम बार लौ दीप की
स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी।

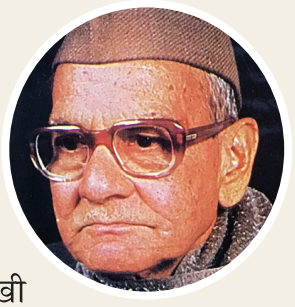
रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा।।

— *द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी*

@KTRS NOT TO BE REPUBLISHED



कवि से परिचय



अभी आपने जो कविता पढ़ी है, उसे हिंदी के प्रसिद्ध कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने लिखा है। बाल साहित्य के चर्चित रचनाकारों में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उन्होंने बच्चों के लिए बहुत-सी रचनाएँ लिखी हैं। उनके द्वारा लिखित 'हम सब सुमन एक उपवन के' जैसे गीत आज भी बहुत लोकप्रिय हैं।

(1916–1998)





पाठ से

आइए, अब हम इस कविता से अपनी मित्रता को और घनिष्ठ बना लेते हैं। इसके लिए नीचे कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। हो सकता है कि इन्हें करने के लिए आप कविता को फिर से पढ़ने की आवश्यकता अनुभव करें।



मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) निम्नलिखित में से कौन-सी बात इस कविता में मुख्य रूप से कही गई है?

- भलाई के कार्य करते रहना
- दीपावली के दीपक जलाना
- बल्ब आदि जलाकर अंधकार दूर करना
- तिमिर मिलने तक नाव चलाते रहना

(2) "जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की, चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी"

यह वाक्य किससे कहा गया है?

- तूफ़ान से
- मनुष्यों से
- दीपकों से
- तिमिर से

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?



मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ शब्द यहाँ दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

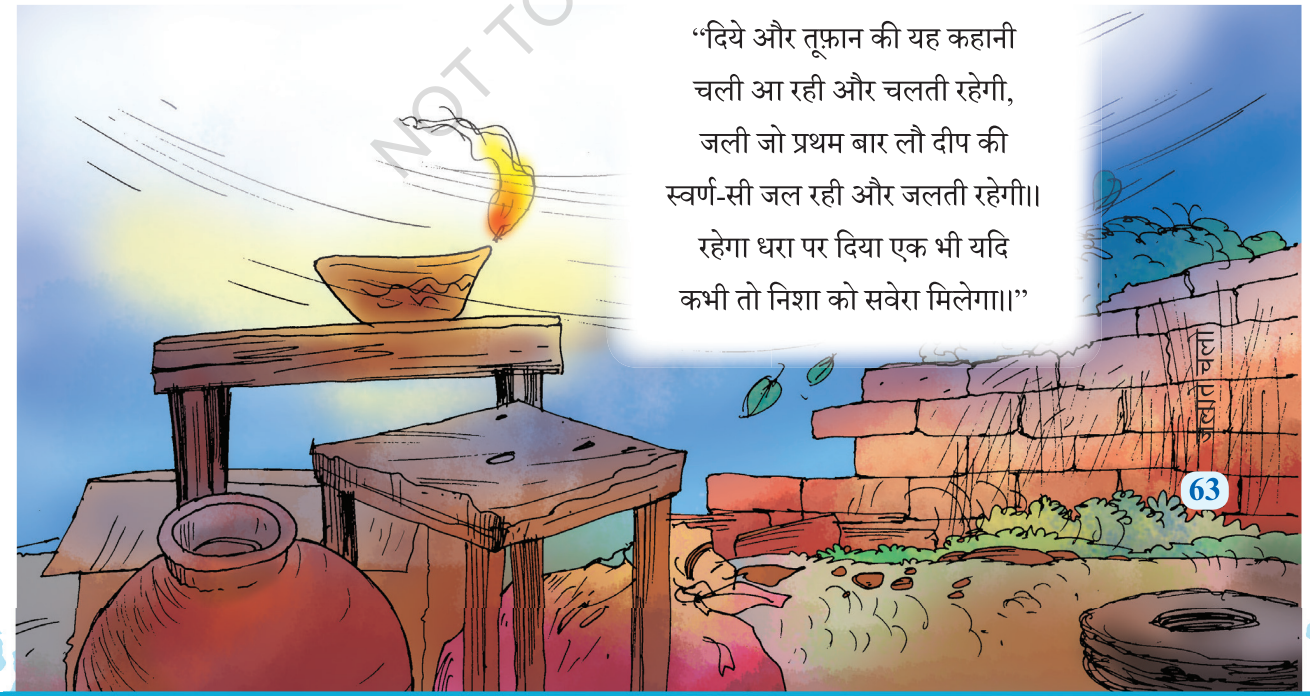
Chapter 7.indd 62 10/06/2024 11:21:05

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. अमावस	1. पूर्णमासी, वह तिथि जिस रात चंद्रमा पूरा दिखाई देता है।
2. पूर्णिमा	2. विद्युत दिये अर्थात बिजली से जलने वाले दीपक, बल्ब आदि उपकरण।
3. विद्युत-दिये	3. समय, काल, युग संख्या में चार माने गए हैं — सत्ययुग (सतयुग), त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग।
4. युग	4. अमावस्या, जिस रात आकाश में चंद्रमा दिखाई नहीं देता।



पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

(क) कविता में अँधेरे या तिमिर के लिए किन वस्तुओं के उदाहरण दिए गए हैं?

(ख) यह कविता आशा और उत्साह जगाने वाली कविता है। इसमें क्या आशा की गई है? यह आशा क्यों की गई है?

(ग) कविता में किसे जलाने और किसे बुझाने की बात कही गई है?



कविता की रचना

"जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर
कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा।"

इन पंक्तियों को अपने शिक्षक के साथ मिलकर लय सहित गाने या बोलने का प्रयास कीजिए। आप हाथों से ताल भी दे सकते हैं। दोनों पंक्तियों को गाने या बोलने में समान समय लगा या अलग-अलग? आपने अवश्य ही अनुभव किया होगा कि इन पंक्तियों को बोलने या गाने में लगभग एक-समान समय लगता है। केवल इन दो पंक्तियों को ही नहीं, इस कविता की प्रत्येक पंक्ति को गाने में या बोलने में लगभग समान समय ही लगता है। इस विशेषता के कारण यह कविता और अधिक प्रभावशाली हो गई है।

आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको और भी अनेक विशेष बातें दिखाई देंगी।

(क) इस कविता को एक बार फिर से पढ़िए और अपने-अपने समूह में मिलकर इस कविता की विशेषताओं की सूची बनाइए, जैसे इस कविता की पंक्तियों को 2–4, 2–4 के क्रम में बाँटा गया है आदि।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।



मिलान

स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलते-जुलते भाव वाली पंक्तियों को रेखा खींचकर जोड़िए—

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 7.indd 64 10/06/2024 11:21:08

स्तंभ 1		स्तंभ 2	
1.	कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा।	1.	विश्व की भलाई का ध्यान रखे बिना प्रगति करने से कोई लाभ नहीं होगा।
2.	जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर।	2.	विश्व में सुख-शांति क्यों कम होती जा रही है?
3.	मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।	3.	विश्व की समस्याओं से एक न एक दिन छुटकारा अवश्य मिलेगा।
4.	बिना स्नेह विद्युत-दिये जल रहे जो बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।	4.	दूसरों के सुख-चैन के लिए प्रयास करते रहिए।



अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) "दिये और तूफ़ान की यह कहानी
चली आ रही और चलती रहेगी"

दीपक और तूफ़ान की यह कौन-सी कहानी हो सकती है जो सदा से चली आ रही है?

(ख) "जली जो प्रथम बार लौ दीप की
स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी"

दीपक की यह सोने जैसी लौ क्या हो सकती है जो अनगिनत सालों से जल रही है?



शब्दों के रूप

"कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी"

'अमावस' का अर्थ है 'अमावस्या'। इन दोनों शब्दों का अर्थ तो समान है लेकिन इनके लिखने-बोलने में थोड़ा-सा अंतर है। ऐसे ही कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इनसे मिलते-जुलते दूसरे

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 7.indd 65 10/06/2024 11:21:09

शब्द कविता से खोजकर लिखिए। ऐसे ही कुछ अन्य शब्द आपस में चर्चा करके खोजिए और लिखिए।

1. दिया ---------- 4. ----------
2. उजेला ---------- 5. ----------
3. अनगिन ---------- 6. ----------



अर्थ की बात

(क) "जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर"

इस पंक्ति में 'चलो' के स्थान पर 'रहो' शब्द रखकर पढ़िए। इस शब्द के बदलने से पंक्ति के अर्थ में क्या अंतर आ रहा है? अपने समूह में चर्चा कीजिए।

(ख) कविता में प्रत्येक शब्द का अपना विशेष महत्व होता है। यदि वे शब्द बदल दिए जाएँ तो कविता का अर्थ भी बदल सकता है और उसकी सुंदरता में भी अंतर आ सकता है।

नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। पंक्तियों के सामने लगभग समान अर्थों वाले कुछ शब्द दिए गए हैं। आप उनमें से वह शब्द चुनिए, जो उस पंक्ति में सबसे उपयुक्त रहेगा—

1. बहाते चलो ---------- तुम वह निरंतर (नैया, नाव, नौका)
   कभी तो तिमिर का ---------- मिलेगा।। (तट, तीर, किनारा)
2. रहेगा ---------- पर दिया एक भी यदि (धरा, धरती, भूमि)
   कभी तो निशा को ---------- मिलेगा।। (प्रात:, सुबह, सवेरा)
3. जला दीप पहला तुम्हीं ने ---------- की (अंधकार, तिमिर, अँधेरे)
   चुनौती ---------- बार स्वीकार की थी। (प्रथम, अव्वल, पहली)



प्रतीक

(क) "कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा"

निशा का अर्थ है— रात।

सवेरा का अर्थ है— सुबह।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

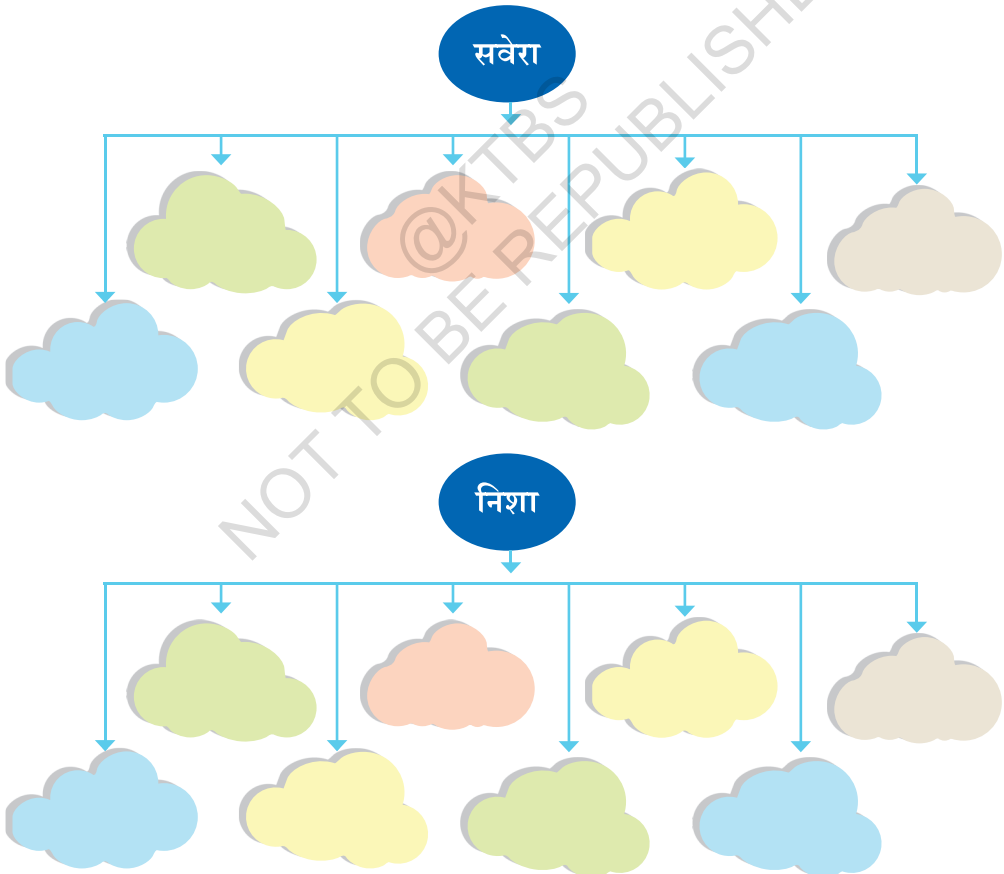
Chapter 7.indd 66 10/06/2024 11:21:09

आपने अनुभव किया होगा कि कविता में इन दोनों शब्दों का प्रयोग 'रात' और 'सुबह' के लिए नहीं किया गया है। अपने समूह में चर्चा करके पता लगाइए कि 'निशा' और 'सवेरा' का इस कविता में क्या-क्या अर्थ हो सकता है।

(संकेत— निशा से जुड़ा है 'अँधेरा' और सवेरे से जुड़ा है 'उजाला')

(ख) कविता में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में मिलकर इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें उपयुक्त स्थान पर लिखिए।

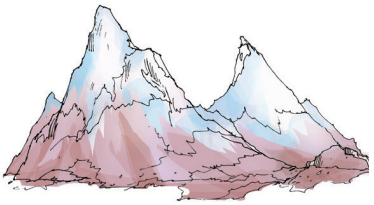
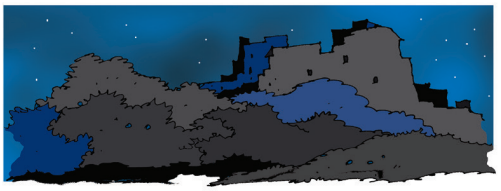
दिये	अँधेरा	अमावस	पूर्णिमा	दिवस	तिमिर	नाव	किनारा
शिला	ज्योति	उजेला	तूफ़ान	लौ	स्वर्ण	जलना	बुझना



@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

(ग) अपने समूह में मिलकर 'निशा' और 'सवेरा' के लिए कुछ और शब्द सोचिए और लिखिए।

(संकेत— नीचे दिए गए चित्र देखिए और इन पर विचार कीजिए।)






@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED



पंक्ति से पंक्ति

"जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की
चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी"

Chapter 7.indd 68 10/06/2024 11:21:12

कविता की इस पंक्ति को वाक्य के रूप में इस प्रकार लिख सकते हैं—

"तुम्हीं ने पहला दीप जला तिमिर की चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी।"

अब नीचे दी गई पंक्तियों को इसी प्रकार वाक्यों के रूप में लिखिए—

1. बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर।
2. जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर।
3. बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।
4. मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।



सा/सी/से का प्रयोग

"घिरी आ रही है अमावस निशा-सी
स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी"

इन पंक्तियों में कुछ शब्दों के नीचे रेखा खिंची है। इनमें 'सी' शब्द पर ध्यान दीजिए। यहाँ 'सी' शब्द समानता दिखाने के लिए प्रयोग किया गया है। 'सा/सी/से' का प्रयोग जब समानता दिखाने के लिए किया जाता है तो इनसे पहले योजक चिह्न (-) का प्रयोग किया जाता है।

अब आप भी विभिन्न शब्दों के साथ 'सा/सी/से' का प्रयोग करते हुए अपनी कल्पना से पाँच वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

पाठ से आगे



आपकी बात

(क) "रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा"

यदि हर व्यक्ति अपना कर्तव्य समझ ले और दूसरों की भलाई के लिए कार्य करे तो पूरी दुनिया सुंदर बन जाएगी। आप भी दूसरों के लिए प्रतिदिन बहुत-से अच्छे कार्य करते होंगे। अपने उन कार्यों के बारे में बताइए।

Chapter 7.indd 69 10/06/2024 11:21:13

(ख) इस कविता में निराश न होने, चुनौतियों का सामना करने और सबके सुख के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया है। यदि आपको अपने किसी मित्र को निराश न होने के लिए प्रेरित करना हो तो आप क्या करेंगे? क्या कहेंगे? अपने समूह में बताइए।

(ग) क्या आपको कभी किसी ने कोई कार्य करने के लिए प्रेरित किया है? कब? कैसे? उस घटना के बारे में बताइए।



अमावस्या और पूर्णिमा

(क) "भले शक्ति विज्ञान में है निहित वह
कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी"

आप अमावस्या और पूर्णिमा के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं। क्या आप जानते हैं कि अमावस्या और पूर्णिमा के होने का क्या कारण है?

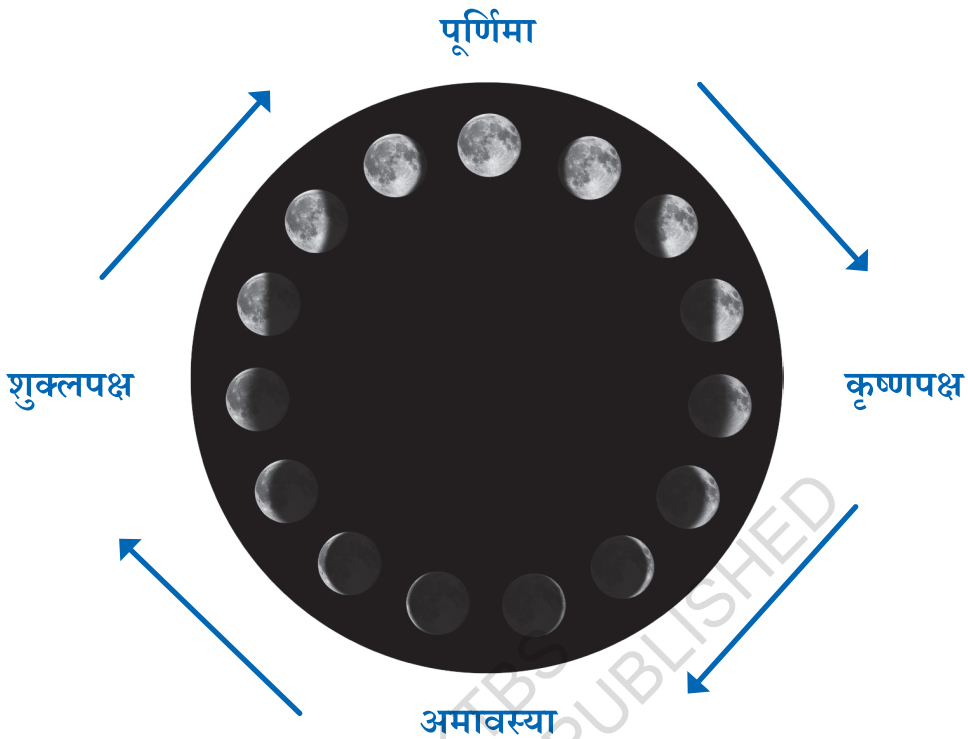
आप आकाश में रात को चंद्रमा अवश्य देखते होंगे। क्या चंद्रमा प्रतिदिन एक-सा दिखाई देता है? नहीं। चंद्रमा घटता-बढ़ता दिखाई देता है। आइए जानते हैं कि ऐसा कैसे होता है।

आप जानते ही हैं कि चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है जबकि पृथ्वी सूर्य की। आप यह भी जानते हैं कि चंद्रमा का अपना कोई प्रकाश नहीं होता। वह सूर्य के प्रकाश से ही चमकता है। लेकिन पृथ्वी के कारण सूर्य के कुछ प्रकाश को चंद्रमा तक जाने में रुकावट आ जाती है। इससे पृथ्वी की छाया चंद्रमा पर पड़ती है, जो प्रतिदिन घटती-बढ़ती रहती है। सूरज का जो प्रकाश बिना रुकावट चंद्रमा तक पहुँच जाता है, उसी से चंद्रमा चमकदार दिखता है। इसी छाया और उजले भाग की आकृति में आने वाले परिवर्तन को चंद्रमा की कला कहते हैं।

चंद्रमा की कला धीरे-धीरे बढ़ती रहती है और पूर्णिमा की रात चंद्रमा पूरा दिखने लगता है। इसके बाद कला धीरे-धीरे घटती रहती है और अमावस्या वाली रात चाँद दिखाई नहीं देता। चंद्रमा की कलाओं के घटने के दिनों को 'कृष्ण पक्ष' को कहते हैं। 'कृष्ण' शब्द का एक अर्थ काला भी है। इसी प्रकार चंद्रमा की कलाओं के बढ़ने के दिनों को 'शुक्ल पक्ष' कहते हैं। 'शुक्ल' शब्द का एक अर्थ 'उजला' भी है।

© KSEEB NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 7.indd 70 10/06/2024 11:21:13



(ख) अब नीचे दिए गए चित्र में अमावस्या, पूर्णिमा, कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष को पहचानिए और ये नाम उपयुक्त स्थानों पर लिखिए—

(यदि पहचानने में कठिनाई हो तो आप अपने शिक्षक, परिजनों या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।)



© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 7.indd 71 10/06/2024 11:21:15



तिथिपत्र

आपने तिथिपत्र (कैलेंडर) अवश्य देखा होगा। उसमें साल के सभी महीनों की तिथियों की जानकारी दी जाती है।

नीचे तिथिपत्र के एक महीने का पृष्ठ दिया गया है। इसे ध्यान से देखिए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

जनवरी 2023 11-30 पौष 1-11 माघ, शक 1944					
रविवार	1 दशमी (शुक्ल)	8 द्वितीया (कृष्ण)	15 अष्टमी (कृष्ण)	22 प्रतिपदा (शुक्ल)	29 अष्टमी (शुक्ल)
सोमवार	2 एकादशी (शुक्ल)	9 द्वितीया (कृष्ण)	16 नवमी (कृष्ण)	23 द्वितीया (शुक्ल)	30 नवमी (शुक्ल)
मंगलवार	3 द्वादशी (शुक्ल)	10 तृतीया (कृष्ण)	17 दशमी (कृष्ण)	24 तृतीया (शुक्ल)	31 दशमी (शुक्ल)
बुधवार	4 त्रयोदशी (शुक्ल)	11 चतुर्थी (कृष्ण)	18 एकादशी (कृष्ण)	25 चतुर्थी (शुक्ल)	
गुरुवार	5 चतुर्दशी (शुक्ल)	12 पंचमी (कृष्ण)	19 द्वादशी (कृष्ण)	26 वसंत पंचमी (शुक्ल)	
शुक्रवार	6 पूर्णिमा	13 षष्ठी (कृष्ण)	20 त्रयोदशी (कृष्ण)	27 षष्ठी (शुक्ल)	
शनिवार	7 प्रतिपदा (कृष्ण)	14 सप्तमी (कृष्ण)	21 अमावस्या	28 सप्तमी (शुक्ल)	

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS

Chapter 7.indd 72 27/08/2024 10:31:21

(क) दिए गए महीने में कुल कितने दिन हैं?

(ख) पूर्णिमा और अमावस्या किस दिनाँक और वार को पड़ रही है?

(ग) कृष्ण पक्ष की सप्तमी और शुक्ल पक्ष की सप्तमी में कितने दिनों का अंतर है?

(घ) इस महीने में कृष्ण पक्ष में कुल कितने दिन हैं?

(ङ) 'वसंत पंचमी' की तिथि बताइए।



NOT TO BE REPUBLISHED © NCERT



आज की पहेली

समय साक्षी है कि जलते हुए दीप
अनगिन तुम्हारे पवन ने बुझाए।
'पवन' शब्द का अर्थ है हवा।

नीचे एक अक्षर-जाल दिया गया है। इसमें 'पवन' के लिए उपयोग किए जाने वाले अलग-अलग नाम या शब्द छिपे हैं। आपको उन्हें खोजकर उन पर घेरा बनाना है, जैसा एक हमने पहले से बना दिया है। देखते हैं, आप कितने सही नाम या शब्द खोज पाते हैं।

Chapter 7.indd 73 10/06/2024 11:21:15

बा	द	ल	ई	ब
प	अ	नि	ल	या
व	क	स	मी	र
न	ह	वा	यु	ब
मा	रु	त	स	ड़



खोजबीन के लिए

कविता संबंधित कुछ रचनाएँ दी गई हैं, इन्हें पुस्तक में दिए गए क्यू.आर. कोड की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें।

- हम सब सुमन एक उपवन के
- बढ़े चलो
- रोज़ बदलता कैसे चाँद भाग 1
- रोज़ बदलता कैसे चाँद भाग 2

@KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 7.indd 74 10/06/2024 11:21:16

पढ़ने के लिए

आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की

आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है
जमुना जी के तट को देखो गंगा का ये घाट है
बाट-बाट में हाट-हाट में यहाँ निराला ठाठ है
देखो, ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
ये है अपना राजपूताना नाज इसे तलवारों पे
इसने सारा जीवन काटा बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला है आज़ादी के नारों पे
कूद पड़ी थी यहाँ हज़ारों पद्मिनियाँ अंगारों पे
बोल रही है कण-कण से कुर्बानी राजस्थान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

देखो, मुल्क मराठों का ये यहाँ शिवाजी डोला था
मुगलों की ताकत को जिसने तलवारों पे तोला था
हर पर्वत पे आग जली थी हर पत्थर एक शोला था
बोली हर-हर महादेव की बच्चा-बच्चा बोला था
शेर शिवाजी ने रखी थी लाज हमारी शान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
जलियाँवाला बाग ये देखो, यहीं चली थी गोलियाँ
ये मत पूछो किसने खेली यहाँ खून की होलियाँ
एक तरफ़ बंदूकें दन-दन एक तरफ़ थी टोलियाँ
मरनेवाले बोल रहे थे इंकलाब की बोलियाँ
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाज़ी अपनी जान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है
यहाँ का बच्चा-बच्चा अपने देश पे मरनेवाला है
ढाला है इसको बिजली ने भूचालों ने पाला है
मुट्ठी में तूफ़ान बँधा है और प्राण में ज्वाला है
जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

— *कवि प्रदीप*

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Chapter 13.indd 156 10/06/2024 11:29:16

शब्दकोश

यहाँ आपके लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान स्वयं लगाएँ कि कौन-सा अर्थ पाठ के लिए अधिक उपयुक्त है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक समानार्थी भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। इन संकेतों से हमें शब्दों की भाषा और व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं—

अं.– अंग्रेज़ी	अ.– अव्यय	(अ.)– अरबी	अ.क्रि.– अकर्मक क्रिया
पु.– पुलिंग	फा.– फारसी	वि.– विशेषण	सं.– संस्कृत
स.क्रि.– सकर्मक क्रिया	सर्व.– सर्वनाम	स्त्री.– स्त्रीलिंग	

@RTBS NOT TO BE REPUBLISHED

शब्दार्थ

अ

अंकुर [पु.सं.]– कली, नोंक, रोआँ, जल, रुधिर, विकास आदि के सूचक चिह्न
अंगारक [पु.सं.]– कार्बन, छोटा, अंगारा
अकस्मात [अ.सं.]– अचानक, संयोगवश, सहसा, बिना कारण
अचंभित [वि.]– चकित, विस्मित
अधर [वि.सं.]– होंठ, नीचा, अंतरिक्ष, पाताल
अधीर [वि.सं.]– धैर्यरहित, उतावला, आकुल, दृढ़तारहित
अनगिनत [वि.]– बेहिसाब, अगणित
अनुमति [स्त्री.सं.]– कोई काम करने, जाने-आने आदि के लिए किसी से ली गई स्वीकृति
अपरूप [वि.सं.]– कुरूप, भद्दा, अपूर्व
अप्रेंटिस [पु.अं.]– काम सीखने के लिए काम करने वाला व्यक्ति
अभिलाषा [स्त्री.सं.]– इच्छा, चाह, लोभ
अमराई [स्त्री.]– आम का बाग, उद्यान
अमावस [स्त्री.]– कृष्ण पक्ष की अंतिम रात्रि, अमावस्या

Shabdkosh.indd 157 10/06/2024 11:43:21

अरि-मस्तक [पु.सं.]– शत्रु का माथा
अर्पण [पु.सं]– देना, दान करना, भेंट करना, वापस करना
असबाब [पु.(अ.)]– आवश्यक सामग्री, चीज़, वस्तु, मुसाफिर के साथ का सामान
असुर [पु.सं.]– दैत्य, दानव, खल, बादल
अस्तबल [पु.(अ.)]– अश्वशाला, तबेला

आ

आगमन [पु.सं.]– लौटना, आना, प्राप्ति, उत्पत्ति
आघात [पु.सं.]– चोट, प्रहार, धक्का, घाव
आच्छादित [वि.सं.]– ढका हुआ, छिपा हुआ
आत्मबल [पु.]– आत्मा का बल, मन का बल
आबद्ध [वि.सं.]– बँधा हुआ, बाधित, जकड़ा हुआ, निर्मित
आहिस्ता [अ.फा.]– धीरे-से, धीमी आवाज़ से

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

उ

उदारता [स्त्री.सं.]– दानशीलता, उदार स्वभाव
उपादान [पु.सं.]– ग्रहण, स्वीकार, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बने, प्रयोग

क

कंटोप [पु.]– वह टोपी जिससे कान ढके रहें
कपाल [पु.सं.]– खोपड़ी, मस्तक, घड़े का टुकड़ा, ढक्कन
करवाल [पु.सं.]– तलवार, खड्ग, नाखून
कलंकित [वि.सं.]– कलंकयुक्त, मोरचा लगा हुआ
कसौटी [स्त्री.]– परख, जाँच, एक काला पत्थर जिस पर सोना घिसकर परखा जाता है
क्रीडा [स्त्री.सं.]– खेल-कूद, किलोल, हास्य-विनोद

क्ष

क्षीण [पु.सं.]– दुर्बल, दुबला-पतला, क्षतिग्रस्त, घटा हुआ

Shabdkosh.indd 158 10/06/2024 11:43:21

ख

खरहरा [पु.]– कंघी करना, लोहे की कई दंतपंक्तियों वाली चौकोर कंघी जिससे घोड़े के बदन की गर्द साफ़ की जाती है

घ

घटा [स्त्री.सं.]– जल भरे बादलों का समूह, मेघमाला
घहर [अ.क्रि.]– पसरना, गरजना, गर्जन
घृणा [स्त्री.सं.]– नफरत, घिन

च

चित्त [पु.सं.]– मन, अंत:करण की चिंतना
चिरायु [वि.सं.]– दीर्घायु, बहुत दिन जीने वाला, चिरजीवी
चोगा [पु.फा.]– लंबा, ढीला-ढाला अँगरखा जिसका आगे का भाग खुला होता है, गाउन

छ

छटा [स्त्री.सं.]– शोभा, छवि, झलक, बिजली
छद्म [पु.सं.]– छल-कपट, बदला हुआ भेष
छहर [स्त्री.]– बिखरना, बिखरने की क्रिया
छीको [पु.]– रस्सी, तार आदि से बनी झोली जैसी चीज़ जिसे छत आदि से लटकाकर उस पर खाने-पीने की चीज़ें रखते हैं, सिकहर, छीका

ज

जन्मदात्री [स्त्री.]– माता, माँ, जननी
जलज [वि.]– कमल, जल में उत्पन्न
जलधर [पु.सं.]– बादल, मेघ
जौहरी [पु.(अ.)]– जवाहरात का रोज़गार करने वाला, रत्न-व्यवसायी, पारखी

त

तरुणाई [स्त्री.]– युवावस्था, जवानी
तरुवर [पु.सं.]– वृक्ष, पेड़

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Shabdkosh.indd 159 10/06/2024 11:43:21

ताड़ [पु.]– एक लंबा वृक्ष जिसमें शाखाएँ नहीं होतीं सिर्फ़ सिरे पर पत्तियाँ होती हैं
तिमिर [पु.सं.]– अंधकार, आँख का एक रोग, अँधेरा
तुच्छातितुच्छ [वि.सं.]– एकदम गया-गुजरा, अत्यंत निकृष्ट
तुर्रा [पु.(अ.)]– टोपी आदि में लगी हुई कलगी, अनोखा

द

दरक [स्त्री.]– दरकने की क्रिया, दरार, चीर
दीवान [पु.फा.]– प्रधानमंत्री, राजा या बादशाह की बैठक या थाने का मुंशी जिसके ज़िम्मे लिखापढ़ी का काम होता है
दूब [स्त्री]– एक प्रकार की घास, दूर्वा
देववाणी [स्त्री.]– देवताओं की वाणी, आकाशवाणी
द्रव्य [पु.सं.]– तरल पदार्थ, किसी पदार्थ का तरल रूपांतर

ध

धरा [स्त्री.सं.]– पृथ्वी, धरती
धावा [पु.]– किसी को जीतने, लूटने आदि के लिए बहुत से लोगों का एक साथ दौड़ पड़ना, हमला
धृष्टतापूर्ण[स्त्री.सं.]– ढिठाई के साथ, उद्दंडतायुक्त, निर्दयता के साथ

न

नद [पु.सं.]– बड़ी नदी, सरिता
नाईं [अ.]– तरह, भाँति
निदान [पु.सं.]– अंत में, आखिर, आदि कारण, रोग का कारण, रोग का निर्णय
निरापद [वि.सं.]– निर्विघ्न, सुरक्षित, आपत्ति से रहित
निर्भीक [वि.सं.]– जो किसी से भय न खाए, निडर, निरापद
निषंग [पु.सं.]– तरकश, तूणीर, तलवार
नेकनामी [स्त्री.फा.]– सुख्याति, सुप्रसिद्धि, सुकीर्ति
नौसिखिया [वि.]– अनुभवहीन, जिसने हाल में ही सीखा हो
न्योछावर [स्त्री.]– समपर्ण करना, त्यागना

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Shabdkosh.indd 160 10/06/2024 11:43:21

प

पठायो [स.क्रि.]– भेजना
पतियायो [स.क्रि.]– विश्वास करना, बात मानना
पराग-कण [पु.सं.]– फूल के भीतर की धूल, पुष्परज
पात्र [पु.सं.]– किरदार, अभिनेता, बरतन
पावस [पु.]– वर्षाऋतु, मानसून, समुद्र की ओर से आनेवाली वर्षा-सूचक हवा
पुतली [स्त्री.]– आँख के बीच का काला भाग जिसके मध्य में रूप ग्रहण करने वाली इंद्रिय होती है
पुनीत [वि.सं.]– पवित्र किया हुआ, शुद्ध
पुलकी [वि.सं.]– रोमांचयुक्त, आनंदित
पेचीदा [वि.फा.]– कठिन, उलझन वाला
पैठना [अ.क्रि.]– गहरे में जाना, प्रवेश करना
प्रफुल्लित [वि.]– खिला हुआ, अति प्रसन्न, प्रमुदित
प्राणवत्ता [स्त्री.सं.]– प्राणवान, जीवित होने के भाव

ब

बज्र-मय [वि.सं.]– कठोर, उग्र, भीषण
बड़ेन [पु.वि.]– उच्च, सामर्थ्यशाली
बदतर [वि.फा.]– अधिक बुरा, ज्यादा खराब
बरबस [अ.]– अकारण, बलपूर्वक, व्यर्थ
बहियन [स्त्री.]– बाँह, भुजा, बाजू
बहुतायत [स्त्री.]– अधिकता, बढ़ती, विशेषता
बांधव [पु.सं.]– निकट-संबंधी, भाई-बंधु, स्वजन
बाग [स्त्री.]– लगाम, रस्सी
बावरी [स्त्री.]– चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों, जलाशय, बावली
बिहँसि [अ.क्रि.]– मंद-मंद मुस्कुराना, खिलना

भ

भटक्यो [अ.क्रि.]– भटकना, इधर-उधर फिरना
भ्रांति [स्त्री.सं.]– भ्रम, संदेह, चक्कर, अस्थिरता

NOT TO BE REPUBLISHED @KTBS

Shabdkosh.indd 161 10/06/2024 11:43:21

म

मंदाग्नि [स्त्री.सं.]– पाचन शक्ति का दुर्बल हो जाना, हाजमे का बिगड़ जाना
मद [स्त्री.(अ.)]– खाता, लेखा, उन्माद, अहंकार
मधुबन (मधुवन) [पु.]– फूलों का बगीचा, बाग
मुद्राएँ [स्त्री.सं.]– मुख,हाथ, गर्दन आदि की कोई विशेष भावसूचक स्थिति, मुख चेष्टा, नाम की मोहरें
मुल्क [पु.(अ.)]– देश, राज्य, प्रदेश
मोहना [स.क्रि.]– लुभाना, छलना

र

रईस [पु.(अ.)]– उच्च वर्ग का आदमी, धनी, अमीर, शिष्ट
रकबा [पु.]– क्षेत्रफल, घिरी हुई ज़मीन, घेरा, अहाता
रण [पु.सं.]– युद्ध, संग्राम, लड़ाई, गति
रियासत [स्त्री.(अ.)]– राज, शासन, अमीरी
रेजीमेंट [स्त्री. अं.]– सेना का एक स्थायी विभाग, कर्नल के अधीन और कई टुकड़ियों में विभक्त
रोपना [स.क्रि.]– लगाना, जमाना, पौधा लगाना
रोमावलि [स्त्री.सं.]– रोमों की पंक्ति, रोयाँ

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

ल

लघु [वि.सं.]– छोटा, निर्बल, फुर्तीला, हल्का, कम
लट्टू होना [पु.]– मोहित होना, मुग्ध होना, हैरान होना
लौ [स्त्री.]– ज्वाला, दीपशिखा, चाह, आशा, कामना

व

वकालतनामा [पु.(अ.)]– किसी मुकदमें में वकील होने का प्रमाण-पत्र, वह लेख जिसके जरिए किसी वकील को किसी मुकदमें की पैरवी का अधिकार दिया जाए

Shabdkosh.indd 162 10/06/2024 11:43:21

वसुंधरा [स्त्री.सं.]– पृथ्वी, देश
वाद्ययंत्र [पु.सं.]– बाजा, बजाने का यंत्र
विकराल [वि.सं.]– भीषण, भयंकर
विगलित [वि.सं.]– पिघला हुआ, बहा हुआ, बिखरा हुआ, गिरा हुआ, सूखा हुआ, शिथिल
विज्ञापन [पु.सं.]– निवेदन, समाचार-पत्रों आदि में प्रचार
विषाक्त [वि.सं.]– विष मिश्रित
वीरगति [वि.सं.]– युद्धक्षेत्र में या युद्ध करते हुए मृत्यु
वैरी [वि.सं.]– शत्रु, शत्रुतापूर्ण, विरोधी, योद्धा
व्यग्र [वि.सं.]– व्याकुल, परेशान, घबराया हुआ, व्यस्त

श

शर्मिंदा [वि.फा.]– लज्जित, लजाया हुआ
शस्य-श्यामला [वि.सं.]– नई घास, फसल, अन्न, धान, श्रेष्ठ
श्राप [पु. सं.]– अमुक का बुरा हो ऐसी बुरी भावना व्यक्त करना, शाप, भर्त्सना
श्वास-प्रश्वास [पु.सं.]– साँस लेना और निकालना

स

संचय [पु.सं.]– एकत्र करना, जोड़, बड़ी राशि, ढेर, संधि
सचेष्ट [वि.सं.]– चेष्टाशील, चेष्टा करने वाला
सनद [स्त्री.(अ.)]– वह जिस पर पीठ टेकी जाए, प्रमाण-पत्र, अनुमति-पत्र
सवेरा [पु.]– प्रातःकाल, सुबह, सूर्योदय काल, सबेरा
समाँ [पु.]– समय, ऋतु, बहार
समृद्ध [वि.सं.]– संपन्न, सशक्त, धनी, उन्नतिशील
सरवर [पु.फा.]– सरोवर, ताल, तालाब, झील
सरित [स्त्री.सं.]– नदी, सरिता, धारावाहिक
साक्षात्कार [सं.पु.]– प्रत्यक्ष भेंट, मुलाकात, ज्ञान, अनुभूति
साधना [स्त्री.सं.]– अभ्यास करना, आराधना, उपासना, इकट्ठा करना
सिंधु [पु.सं.]– समुद्र, सागर, एक प्रसिद्ध नदी, दान
सिक्त [वि.सं.]– सींचा हुआ, भींगा हुआ, गीला

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

Shabdkosh.indd 163 27/08/2024 10:32:23

सुयश [पु.सं.]– सुंदर यश, सुकीर्ति
सुरम्य [वि.सं.]– अति रमणीय, मनोहर
सूक्ष्म पदार्थ [वि.सं.]– बहुत बारीक तत्व, वस्तु
सूक्ष्मदर्शी [वि.सं.]– बहुत बारीक देखने वाला यंत्र, अणु रूप देखने वाला यंत्र
स्नेह [पु.सं.]– प्रेम, कोमलता, तेल, दयालुता

ह

हतप्रभ [वि.सं.]– जिसकी कांति क्षीण हो गई हो
हय-टाप [स्त्री.सं.]– घोड़े के पाँव के पृथ्वी पर पड़ने से उठी आवाज़

NOT TO BE REPUBLISHED



Shabdkosh.indd 164 10/06/2024 11:43:21

पहेलियों के उत्तर

पाठ संख्या			
1.	**मातृभूमि**	*शब्दजाल*	अलगोजा, बीन, बाँसुरी, सींगी, शहनाई, नादस्वरम, भंकोरा, शंख
		आज की पहेली	हिमालय, गंगा, भारत, कलियाँ, पवन
3.	**पहली बूँद**	*शब्द पहेली*	नगाड़ा, नयन, जलधर, दूब, अश्रु, अंबर
5.	**रहीम के दोहे**	*आज की पहेली*	चना, माचिस
6.	**मेरी माँ**	*आज की पहेली*	मंगलमयी, प्रत्येक, ग्यारह, धार्मिक, महान, स्वाधीन, दुखभरी, साधारण, छोटी, बड़ा, खूब, मनोहर
7.	**जलाते चलो**	*आज की पहेली*	पवन, मारुत, वायु, समीर, बयार, अनिल
8.	**सत्रिया और बिहू नृत्य**	*आज की पहेली*	मूली, नारियल, होंठ, चींटी
9.	**मैया मैं नहिं माखन खायो**	*आज की पहेली*	खोया, पनीर, मिठाई, छाछ, लस्सी, मक्खन, शरबत, आइसक्रीम
11.	**चेतक की वीरता**	*आज की पहेली*	जलज, पतंग, अंधेरा, गुलाबजामुन, मानचित्र
12.	**हिंद महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान**	*आज की पहेली*	मेरा भारत मेरा गौरव
13.	**पेड़ की बात**	*आज की पहेली*	रात, तमाम, ममता, ताप, पल्लव, वसंत, तना, नाम, मज़बूत, तरल, लटक, कम

© KTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Shabdkosh.indd 165 10/06/2024 11:43:21

'ब्रेल भारती' हिंदी वर्ण व गिनती

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ
औ	ं	ः							
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श
ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ				
ड़	ढ़	ऽ	़	◌	ॅ	ऌ	ऑ		

१	२	३	४	५
६	७	८	९	०

@CTBS NOT TO BE REPUBLISHED

Shabdkosh.indd 166 10/06/2024 11:43:22